कविता आज़ादीअ खांपोइ ڪويتا آزاديءَ کانپوءِ

सिन्धी कविता-संग्रह

سنڌي ڪويتا - سنگرھ

ल बुक ट्रस्ट, इंडिया نئشنل بوڪ ٽرسٽ، انڊيا

एकः सूते सकलम्

M.K. Jetley

सिन्धी कविता-संग्रह

سنڌي ڪويتا-سنگره

1974 (शक 1896)
(١٨٩٦ شڪ) ١٩٧٤

चार रुपया
چار رپيا

डायरेक्टर, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5, ग्रीन पार्क नईं देहली-16 छपायो ऐं नीलम प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्द कालोनी, लाजपत नगर, नईं देहली-24 छप्यो ।

भारती कविता आज़ादीअ खांपोइ

ڀارتي ڪويتا آزاديءَ کانپوءِ

सिन्धी कविता-संग्रह

سنڌي ڪويتا-سنگره

संपादक

मोतीलाल जोतवाणी

سمپادڪ

موتيلال جوتواڻي

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई देहली

نئشنل بوڪ ٽرسٽ، انڊيا، نئين دهلي

भूमिका

सिन्धी शाइर नारायण श्याम हिक हंधि शाइरीअ ते पंहिंजो ख़याल ज़ाहिर कंदे कृष्ण-लीला जे हिक मशहूर चित्र जी ग़ाल्हि कई आहे। उन चित्र में कृष्णु राधा जा वार संवारे रह्यो आहे एं राधा जे साम्हूं आईनो आहे। पर हाणे हू हिक ब्रिए खे कीअं डिसनि ? एं डिसण बिना कीअं रही सघनि ? आईनो उन मसइले जो हल आहे। उनमें उन्हनि ब्रिन्ही जा रूप अक्स-अंदाज़ थियनि था एं हू महव एं मस्रूर थी वञनि था। शाइरीअ में शाइर जी दाख़िली व ख़ारिजी ज़िन्दगी—वातिन व ज़ाहिर जी बेदारी, शख़्सी एं समाजी ज़िन्दगी-हिक ई महिल, गडोगडु, झलकंदूं आहिनि।

देश जे दुखदाई विर्हाङे बाद सिन्धु जा हिन्दू पंहिंजे वतन जा वण छडे, उतां लडे भारत जे जुदा-जुदा प्रांतनि में अची रह्या। पंजाब एं बंगाल जा अध हिस्सा भारत में ई रह्या, लेकिन सिन्धु समूरो पाकिस्तान वण्यो। सिन्धयुनि खे पंहिंजी जनमभूमीअ जी क़ुर्बानी डियणी पेई एं हू भारत में अची अटे, लटे एं अझे जी मुश्किलात खे मुंहुं डियण में लगी व्या एं उन वक़्त जो काव्य उन वक़्त जे जीवन जो आईनो आहे। इते हिक ग़ाल्हि असांजो ख़ास ध्यान लहिणो। असीं डिसूं था त उर्दू, पंजाबी एं कंहिं हद

Mrs. Sushila Motwani
Lecturer in Sindhi
GCA

ڀومڪا

سنڌي شاعر نارائڻ شيام هڪ هنڌ شاعريءَ تي پنهنجو خيال ظاهر ڪندي ڪرشڻ-ليلا جي هڪ مشهور چتر جي ڳالهه ڪئي آهي. اُن چتر ۾ ڪرشن راڌا جا وار سنواري رهيو آهي ۽ راڌا جي سامهون آئينو آهي. پر هاڻي هو هڪ ٻئي کي ڪيئن ڏسن؟ ۽ ڏسڻ بنا ڪيئن رهي سگهن؟ آئينو اُن مسئلي جو حل آهي. اُن ۾ انهن ٻنهي جا روپ عڪس-انداز ٿين ٿا ۽ هو مگن ۽ مسرور ٿي وڃن ٿا. شاعريءَ ۾ شاعر جي داخلي ۽ خارجي زندگي - باطن ۽ ظاهر جي بيداري، شخصي ۽ سماجي زندگي - هڪ ئي مهل، گڏو گڏ، جهلڪنديون آهن.

ديش جي دکدائي ورهاڱي بعد سنڌ جا هندو پنهنجي وطن جا وڻ ڇڏي، اُتان لڏي، ڀارت جي جدا جدا پرانتن ۾ اچي رهيا. پنجاب ۽ بنگال جا اڌ حصا ڀارت ۾ ئي رهيا، ليڪن سنڌ سمورو پاڪستان ٿيو. سنڌين کي پنهنجي جنم ڀوميءَ جي قرباني ڏيڻي پيئي ۽ هو ڀارت ۾ اچي آئي، لٽي ۽ اُجهي جي مشڪلات کي منهن ڏيڻ ۾ لڳي ويا ۽ اُن وقت جو ڪاوش. اُن وقت جي جيون جو آئينو آهي. اِهي هڪ ڳالهه اسانجو خاص ڌيان ڇڪيو. اسين ڏسون ٿا ته اُردو، پنجابي ۽

ताईं हिन्दी कविता में विर्हाङे खांपोइ हिन्दुस्तान-पाकिस्तान ब्रिन्ही मुल्कनि में थियल ख़ूनरेज़ी एं हिंसा जे ख़िलाफ़ ग़ाल्हियूं बयान कयूं वेयूं। लेकिन सिन्धी शाइरीअ में हिंसा जे अहिड़े डुख जो को उहञाण नथो मिले। सूफ़ी संतनि जी भूंइ सिन्धु में हिन्दू एं मुसलमान हिक ब्रिए सां भाई-चारे एं प्रेम सां रहंदा हुआ। सिन्धी जाती अहिड़े संकट जे समे पुणि दिल एं दिमाग़ जो तवाज़न क़ायम रखी सघी, विश्व-साहित में इहो हिकु अनोखो मिसाल आहे। हाणे वि सरहद जे ब्रिन्ही पासे अञां खे हिक ब्रिए लाइ क़ुर्ब एं सिक आहे। सिन्धी शाइरनि सरहद पार हिक ब्रिए खे प्रेम-पात्यूं पिए लिख्यूं आहिनि। 1965 जी हिंद-पाक लड़ाईअ वक़्ति सिन्धु जे मायनाज़ शाइर शेख़ अयाज़ भारत जे मशहूर सिन्धी कवी नारायण श्याम खे मुख़ातिब थी लिख्यो :

ही संग्राम !
साम्हूं आ
नारायण श्याम !
हुनजा मुंहिंजा
क़ौल बि साग्या
ब्रोल बि साग्या
हू कविता जो काक-धणी, पर
मुंहिंजा रंग रतोल बि साग्या।........
हुन ते कीअं बंदूक़ खणां मां !........
हुन खे कीअं बंदूक़ हणां मां !
कीअं हणां मां !!........

ڪنهن حد تائين هندي ڪوتا ۾ ورهاڱي ڪانپوءِ هندستان، پاڪستان ٻنهي ملڪن ۾ ٿيل خونريزي ۽ هنسا جي خلاف ڏاڍيون بيان ڪيون ويئون. ليڪن سنڌي شاعريءَ ۾ هنسا جي اهڙي ڏيک جو ڪو اُهڃاڻ نٿو ملي. صوفي سنتن جي ڀُونءِ سنڌ ۾ هندو ۽ مسلمان هڪ ٻئي سان ڀائيچاري ۽ پريم سان رهندا هئا. سنڌي جاتي اهڙي سنڪٽ جي سمي پڻ دل ۽ دماغ جو توازن قائم رکي سگهي، وشو-ساهت ۾ اهو هڪ انوکو مثال آهي. هاڻي ته سرحد جي ٻنهي پاسي اسانکي هڪ ٻئي لاءِ قرب ۽ سڪ آهي. سنڌي شاعرن سرحد پار هڪ ٻئي کي پريم-پاتيون پئي لکيون آهن. ١٩٦٥ جي هند پاڪ لڙائيءَ وقت سنڌ جي مايه ناز شاعر شيخ اياز ڀارت جي مشهور سنڌي ڪوي نارائڻ شيام کي مخاطب ٿي لکيو:

هي سنگرام!
سامهون آ
نارائڻ شيام!
هنجا منهنجا،
قول ته ساڳيا،
ٻول ته ساڳيا.
هو ڪوتا جو ڪاڪ-ڏٽي، پر
منهنجا رنگ رتول ته ساڳيا....
هن تي ڪيئن بندوق ڪڍان مان!
هن کي ڪيئن بندوق هڻان مان!
ڪيئن هڻان مان!!....

سمع

विर्हाङे खांपोइ जी सिन्धी शाइरीअ जा मौज़ूअ पंहिंजे वतन जी सिक, निर्वासी कैम्पुनि जी ज़िन्दगी, रोज़मर्रा जी ज़िन्दगीअ जे समाजी-माली मसइलनि सां मुक़ाबलो, नओं निज़ाम खड़ो करण जी चाहना वग़ैरह हुआ। 1953 में उस्ताद शाइर अज़ीज़ जो नओं कविता-संग्रह "आबशार" ज़ाहिर थ्यो एं उनमें भूमिका जी पहिरीं सिट हुई: "सिन्धु खां रोई मोकिलाइण बाद ही पहिर्यों किताब आहे, जो छपाए शाया थो कर्यां।" एं जड॒हिं उन संग्रह जो पहि॒र्यों शेर थो पढ़िजे त दिल उदास-उदास थ्यो पवे:—

वतन जे बाग़ जा विसिरी न बुल्बुल खे तराना व्या,
प्या थी दूर गुल जे एं फिटी जे आश्याना व्या।

निर्वासी कैम्पुनि जी ज़िन्दगी परसराम ज़िया जी मज़ाक़ी खां वधीक तन्ज़ी शाइरीअ में पंहिंजी समूरी हक़ीक़त में अयां थी:—

पिटे थी पोहूअ माउ !
याहींअ वारो पीर पुज॒ंदुनि, लाल साईं का उबती हणंदुनि
कैम्प में आणे फिटो कयाऊं, डु॒ई अटे जो पाउ। पिटे थी....

उन वक्ति वडी॒ उम्र जे किनि शाइरनि सिन्धी शाइरीअ जी रवायत मूजिब सूफ़ियाना बैत एं रुबाइयूं, क़त्आत एं ग़ज़ल पुणि लिख्या। अहिड़ीअ शाइरीअ जे गहरायुनि में एहसास भिज॒नि था एं हवास तर्बियत पाइनि था। पर पोइ वि उन दौर जे सिन्धी शाइरीअ जो मुख्य सुर तरक़्क़ीपसंदीअ जो हो। विर्हाङे खां अगु॒ ब॒यनि प्रांतनि

ورهاڱي کان پوءِ جي سنڌي شاعريءَ جا موضوع پنهنجي وطن جي سڪ، اُرواسي ڪيمپن جي زندگي، روزمره جي زندگيءَ جي سماجي - مالي مسئلن سان مقابلو، نئون نظام کڙو ڪرڻ جي چاهنا وغيره هئا. ١٩٥٣ ۾ اُستاد شاعر عزيز جو نئون ڪويتا - سنگره ''آبشار'' ظاهر ٿيو ۽ اُن ۾ ڀومڪا جي پهرين سٽ هئي، ''سنڌ کان روئي موڪلاڻ بعد هي پهريون ڪتاب آهي، جو ڇپائي شايع ٿو ڪريان.'' ۽ جڏهن اُن سنگره جو پهريون شعر ٿو پڙهجي ته دل اُداس - اُداس ٿيو پوي:—

وطن جي باغ جا وسري ته بلبل کي ترانا ويا
پيا ٿي دور گل جي ۽ ڦٽي جي آشيانا ويا.

اُرواسي ڪيمپن جي زندگي پرسرام ضيا جي مذاقي کان وڌيڪ طنزي شاعريءَ ۾ پنهنجي سموري حقيقت ۾ عيان ٿي:—

پٽي ٿي پوهوءَ ماءُ!
ٻارهينءَ وارو پير پڄندن، لال سائين کا اُٺي هٽندن،
ڪيمپ ۾ آٽي ڦٽو کياٿون، ڏٺي اٿي جو پاءُ—
پٽي ٿي پوهوءَ ماءُ....

اُن وقت وڏي عمر جي ڪن شاعرن سنڌي شاعريءَ جي روايت موجب صوفيانا بيت ۽ رباعيون، قطعات ۽ غزل پڻ لکيا. اهڙي شاعريءَ جي گهرائي ۾ احساس پڄن ٿا ۽ حواس ترهيمي پائن ٿا. پر پوءِ به اُن دور جي سنڌي شاعريءَ جو مکيه سُر ترقي پسنديءَ جو هو. ورهاڱي کان اڳ بين پراڻن

نو

जियां सिन्धु में पुणि तरक़्क़ीपसंदीअ जी पुरज़ोर लहर उथी हुई। साग़ी लहर जो ज़ोर भारत जी आज़ादीअ खांपोइ केतिरा साल जारी रह्यो। तरक़्क़ीपसंद शाइरनि रूस-चीन जी साराह कई, इन्क़लाब जा नारा हंया ऐं तरक़्क़ीपसंद अदब जे नाले में साम्यवाद जो प्रचार कयो। पर 1962 ताईं ईंदे ईंदे, चीन जी भारत मथां काह वक़्ति, उन लहर जो ज़ोर बिल्कुल टुटी प्यो। हूंअ जे असीं उनमां महज़ नारेबाज़ी वारनि मिसालनि खे हिक पासे छड्डे डि्यूं त डि्संदासीं त तरक़्क़ीपसंद शाइरीअ में घणनि ई हंधि किसान, मज़दूर ऐं बि्ए मज़्लूम तब्क़े जा हक़ीक़ी चित्र पेश कयल आहिनि। न सिर्फ़ एतिरो, बल्कि उन करे काव्य-विषय सां गड्डोगड्डु काव्य-भाषा में बि फेरो आयो। काव्य में आम माण्हुनि जी भाषा जो वाहपो वध्यो। अर्जुन शाद, ईश्वर आंचल, कृष्ण राही, गोवर्द्धन भारती वग़ैरह उन दौर जा मुख्य शाइर हुआ। पर पोइ उन्हनि मां घणा ऐं ब्या बि केतिरा ई शाइर घोर तरक़्क़ीपसंदीअ जे रद्दे अमल तौर (साग़िए साग़िए ऐं, ख़ास करे भारत मथां चीन जी काह खांपोइ, खोखले-खोखले ख़याल ऐं गूनागूनियत खां घणो-तणो ख़ाली-ख़ाली फ़न जे ख़िलाफ़) उथी खड़ा थ्या ऐं पाकिस्तानी सिन्धी शाइर अयाज़ ऐं भारती सिन्धी शाइर श्याम जी नईं क्लासीकल (Neo-Classical) वाट अपनाइण ताइ तयार थ्या। क़ुदरत जो फ़ल्सफ़ियाना बयान, लोक-कथाउनि जे सूरमनि ऐं सूरम्युनि जे ताल्लुक़ात खे नएं जुग जी नईं रोशनीअ में डि्सणु, आतल-सुआतल ऐं रवायती छंदनि खे नईं ज़िन्दगी

جڏهن سنڌ ۾ پڻ ترقي پسنديءَ جي پرزور لهر آئي هئي. ساڳي لهر جو زور ڀارت جي آزاديءَ کانپوءِ ڪيترا سال جاري رهيو. ترقي پسند شاعرن روس- چين جي ساراهه ڪئي، انقلاب جا نعرا هنيا ۽ ترقي پسند ادب جي ٿالهي ۾ ساميواد جو پرچار ڪيو. پر ١٩٦٢ ڌاري ايندي- ايندي، چين جي ڀارت مٿان ڪاهه وقت، اُن لهر جو زور بلڪل ٽٽي پيو. هونءَ جي اسين اُن مان محض لفظي بازي وارن مثالن کي هڪ پاسي ڇڏي ڏيون ته ڏسنداسين ته ترقي پسند شاعريءَ ۾ گهڻن ئي هنڌ ڪسان، مزدور ۽ ٻئي مظلوم طبقي جا حقيقي چٽ پيش ڪيل آهن. نه صرف ايترو، بلڪ اُن ڪري، ڪاويه- وشيه سان گڏو گڏ ڪاويه- ڀاشا ۾ به ڦيرو آيو. ڪاويه ۾ عام ماڻهن جي ڀاشا جو واهپو وڌيو. ارجن شاد، ايشور آنچل، ڪرشن راهي، گوورڌن ڀارتي وغيره اُن دور جا مکيه شاعر هئا، پر پوءِ اُنهن مان ڪجهه ۽ ٻيا به ڪيترائي شاعر گهور ترقي پسنديءَ جي رد- عمل طور (ساڳئي ساڳئي ۽، خاص ڪري ڀارت مٿان چين جي ڪاهه کانپوءِ، ڪوڪلي- ڪوڪلي خيال ۽ گوناگونيت کان گهٽو ٿلهو خالي- خالي فن جي خلاف) اُٿي ڪڙا ٿيا ۽ پاڪستاني سنڌي شاعر اياز ۽ ڀارتي سنڌي شاعر شيام جي ائين ڪلاسيڪل (Neo-classical) واٽ اپنائڻ لاءِ تيار ٿيا. قدرت جو فلسفيانه بيان، لوڪ ڪٿائن جي سورمن ۽ سورمين جي تعلقات کي ائين جڳ جي ائين روشنيءَ ۾ ڏسڻ، جاڳل- سجاڳل ۽ روايتي

پارهن

ड्डियणु ऐं फ़ार्म जी पुख़्तगी इन क़िस्म जी शाइरीअ जूं के ख़ासियतूं आहिनि। दोहो, वाई, काफ़ी, ग़ज़ल वग़ैरह कविता जा पुराण रूप परंपरावाद जे ढेर तां उथी, कर मोड़े, सिन्धी शाइरीअ में नईं ताज़गी ऐं नओं रंग भरण लग्रा। मिसाल तौर, उन नईं क्लासीकल धारा में वाई ऐं ग़ज़ल, वाईअ ऐं ग़ज़ल जी पुराणी माना ताईं महदूद न रह्या, बल्कि उन्हनि में, बदिल्यल हवालनि में इश्क़ ऐं हुस्न जे बयान खांसवाइ, अज़ोकी तल्ख़ ज़िन्दगीअ जूं ग्राल्हियूं पुणि नुमाया थ्यूं। दोहे, सोरठे ऐं उन्हनि ते ब्रुधल ब्रयनि नमूननि में नारायण श्याम, कृष्ण राही, इन्द्र भोज़वाणी ऐं हासाराम पीआ जो ख़ास मक़ाम आहे। श्याम जी "रूपमाया" सानेटनि में खण्ड-काव्य आहे। प्रभू वफ़ा ऐं हरी दिलगीर जा पंजकड़ा ऐं गीत मशहूर आहिनि।

अग्रे सिन्धू नदीअ वारे वसीअ मैदान में सिन्धी सुभाव सां ठहकंदड़ वसीअ वहरनि वारी शाइरी थींदी हुई। पर हिते सिन्धी घणो करे तंग शहरनि में अची ग्राहट थ्या आहिनि ऐं इनकरे संदनि सुभाव में क़ुदरती फेरे मुताबिक़ नंढिड़नि-नंढिड़नि वज़ननि में ब्रुधल सुंदर सुहिणी शाइरी थिए थी। सुग्रन आहूजा जो हिकु शेर मुलाहज़ा फ़र्मायो;

पंहिंजे ड्डिसण खे किअं समुझायां,
सुहिणा माण्हू सुहिणा लग्रनि था।

कला पख में नंढिड़नि बहरनि खांसवाइ ब्रयूं बि केतियूं ग्राल्हियूं आयूं आहिनि। फ्रांसीसी शाइरीअ जी सिन्फ़

ڇندن کي نئين زندگي ڏني ۽ فارس جي نغمگي ان قسم جي شاعريءَ جون ڪي خاصيتون آهن. دوهو، وائي، ڪافي، غزل وغيره ڪويتا جا پراڻا روپ پرمپراواد جي پيرن اٿي، ڪرموڙي، سنڌي شاعريءَ ۾ نئين تازگي ۽ نئون رنگ ڀرڻ لڳا. مثال طور، اُن نئين ڪلاسيڪل ڌارا ۾ وائي ۽ غزل، وائي ۽ غزل جي پراڻي معنيٰ تائين محدود نه رهيا، بلڪ اُهن ۾ بدليل حالتن ۾ عشق ۽ حسن جي بيان کانسواءِ، اجوڪي تلخ زندگيءَ جون ڳالهيون به نمايان ٿيون. دوهي، سورٺي ۽ انهن جي بدل ٻين نمونن ۾ نارائڻ شيام، ڪرشن راهي، اندر ڀوڄواڻي ۽ هاسارام ”پيم“ جو خاص مقام آهي. شيام جي ”روپ مايا“ ساليڙن ۾ ڪنب ـ ڪاوڙ آهي. پريو وفا ۽ هري دلگير جا پنجڪڙا ۽ گيت مشهور آهن.

اڳي سنڌو نديءَ واري وسيع ميدان ۾ سنڌي سڀاو سان ٺهڪندڙ وسيع اُڏرن واري شاعري ٿيندي هئي. پر هتي سنڌي گهڻو ڪري تنگ شهرن ۾ اچي ڳاهٽ ٿيا آهن ۽ اڪري سنڌن سڀاو ۾ قدرتي ڦيري مطابق ننڍڙن ـ ننڍڙن وزن ۾ بدل سنڌر سهڻي شاعري لکي ٿي. سڳن آهوجا جو هڪ شعر ملاحظه فرمايو:—

پنهنجي ڏس ڪي ڪيئن سمجهايان،
سهڻا ماڻهو سهڻا لڳن ٿا.

ڪلاسيڪ ۾ ننڍڙن بحرن کانسواءِ ٻيون به ڪيتريون ڳالهيون آيون آهن. فرانسيسي شاعريءَ

ليرهن

तराईले सिन्धीअ में अपनाई वेई आहे। जेतोणीकि इन तर्ज़ शाइरीअ में पहिरीं सिन्धी तख़्लीक़ हरी दिलगीर कई हुई, पर इन में हरीकान्त खे मुमताज़ मक़ाम हासिल आहे। जपानी हाईकू जी तर्ज़ ते नारायण श्याम दोहे छंद में हिकु कामयाब तजरबो कयो, जंहिंकरे हाणि दोहे में सिर्फ़ टे चरण ऐं 35 मात्राऊं रहिजी वेयूं। सिन्धीअ जो 35 मात्राउनि जो इहो दोहो 'डिसण में अञा नंढो, पर घाउ करण में वधीक गंभीर' आहे। शाह अब्दुल करीम जे कलाम में तन्हा मिलनि था; इन्द्र भोजुवाणीअ इन तर्ज़ खे वरी जियार्यो।

तरक़्क़ीपसंद धारा ऐं नईं क्लासीकल धारा खांपोइ 1965 धारे हाणोकी सिन्धी कविता जी नईं, मुख्य धारा जे रूप में नईं कविता जो विकास थ्यो। इएं त विच विच में असांजे भारत देश ते चीन ऐं पाकिस्तान जे हमलनि वक़्ति वतन लाइ हुब ऐं पंहिंजूं जान्यूं क़ुर्बान करण वारी भावना जी सुभावीक लहर उथंदी रही। नईं कविता में अजोके परेशान-सरगर्दान इन्सान जी भरपूर तस्वीर आहे— इन्सान जी निराशा, घबराहट ऐं थकावट खे अक्स-अंदाज़ कंदड़ तस्वीर! मन जी ख़ुशी कान, बाहिरीं तड़क-भड़क घणी! ज़िन्दगीअ जा क़दुर तमाम घणी तेज़ीअ सां वदिलजी रह्या आहिनि। इएं थो लगे, हर पंजें साल हिक नईं पीढ़ी, हिकु नओं नज़रियो पैदा थी रह्यो आहे ऐं जिअं जिअं माण्हू उम्र में वडो थींदो थो वञे तिअं तिअं पहिंजे ई वक़्त में घणो ऐं घणो पुठिते पइजी वियलु प्यो लगे।

جي صنف ترائيل سنڌيءَ ۾ اپنائي وئي آهي.
جيتوڻيڪ ان طرز شاعريءَ ۾ ٻهراڻ سنڌي تخليق
هري دلگير ڪئي هئي، پر ان ۾ هرڪالت کي
ممتاز مقام حاصل آهي. جپاني هائيڪوءَ جي طرز
تي نارائڻ شيام دوهي ڇند ۾ هڪ ڪامياب تجربو
ڪيو، جنهن ڪري هاڻ دوهي ۾ صرف ٽي چرڻ ۽
٣٥ ماترائون رهجي ويئون. سنڌيءَ جو ٣٥ ماترائن
وارو دوهو "ڏسڻ ۾ اچا ننڍو، پر ڏهاءَ ڪرڻ
۾ وڏيڪ گنڀير" آهي. شاهه عبدالڪريم جي ڪلام ۾ تنها
ملن ٿا ۽ اندر ڀوڄواڻيءَ ان طرز کي وري جيارو.

ترقي پسند ڌارا ۽ نئين ڪلاسيڪل ڌارا کانپوءِ
١٩٦٥ ڌاري هاڻوڪي سنڌي ڪويتا جي نئين،
مکيه ڌارا جي روپ ۾ نئين ڪويتا جو وڪاس ٿيو.
انهن ڏه وچ وچ ۾ اسانجي ڀارت ديش تي چين ۽
پاڪستان جي حملن وقت وطن لاءِ حب ۽ پنهنجون
جانيون قربان ڪرڻ واري ڀاونا جي سياويڪ لهر
اٿندي رهي. نئين ڪويتا ۾ اڄوڪي پريشان - سرگردان
انسان جي ڀرپور تصوير آهي — انسان جي نراشا،
گهٻراهٽ ۽ ٿڪاوٽ کي عڪس - انداز ڪندڙ تصوير!
من جي خوشي ڪاڻ، ٻاهرين ٽڪ - ٽڪ گهڻي!
زندگيءَ جا قدر تمام گهڻي تيزيءَ سان بدلجي رهيا
آهن. انهن ٿو لڳي، هر پندرهين سال هڪ نئين
پيڙهي، هڪ نئون نظريو پيدا ٿي رهيو آهي ۽ جڏهن
جڏهن ماڻهو عمر ۾ وڏو ٿيندو ٿو وڃي، تئن تئن
پنهنجي ئي وقت ۾ گهڻو ۽ گهڻو پنهنجي وال
ٻڌل رهن

पीढ़चुनि जे विच में खाही वञे थी तिहाई वधंदी। वधंदड़ आवादीअ जे अञोके समे में नएं इन्सान जो जनम नइमत न, लानत थी प्यो आहे। शायद इनकरे सेक्स-संबुंध ग़ैर-पाक, रेल छेल एं घिंघिला थी प्या आहिनि। सभु कुछु रवा थी प्यो आहे।

कृष्ण राहीअ अहमदाबाद मां निकरंदड़ "कविता" जे ख़ास नईं कविता अंक 1972 में ठीक लिख्यो आहे त "अजु जी हिन खण्डहरी सभ्यता हर ज़िन्दा मन खे मोअन-जो-दड़ो डिनो आहे।" आत्मा में डार पइजी वेई आहे। कंहिं ग़ालिह जी पक नाहे, मिड़नी मागुनि ते ग़ैर यक़ीनी आहे। इन्सान मुंझ्यल एं वाइड़ो पंहिंजी वधंदड़ ताक़त जे चमत्कार खे पाणेही पाण डिसी रह्यो आहे। जेट हवाई जहाज़ सिर मथां आसमान जी स्लेट ते तबाही एं वरबादीअ जा निशान छड़े उड़ामी रह्या आहिनि। जमुना नदीअ में अगु जिते अखा-फुला पवंदा हुआ एं उनजे किनारे ते अगु जिते भगुत कवी सूरदास प्रेम जा गीत आलाप्या हुआ, अजु जो शाइर उते उन्हीअ नदीअ में सिगरेट जा ख़ाली पैकेट विझी "झूले लाल" एं "जमुना माई जी जय" प्यो करे। इन्सान ख़ाली पैकेट जियां वक़्त जी लहर ते सहिकी रह्यो आहे। हवा बंद आहे। पाणी लुड़ाटचलु आहे। छा सभिनी अनासिर गड्डिजी इन्सान जे ख़िलाफ़ साज़िश कई आहे ?

तसुं, ही हवाई जहाज़ जेट
आसमान जी स्लेट…अलाजे छा लिखी व्या ?
………

پيو لڳي. پڙهڻ جي وچ ڪاٺي وڃي ٿي لهائڻ وڌائيندي. وڌندڙ آباديءَ جي اڄوڪي سمي ۾ ٺهڻ انسان جو جنم نعمت بدران لعنت ٿي پيو آهي. شاهد اڪري سيڪس - سمبنڌ غير پاڪ، رهل چهل ۽ گهرگهلا ٿي پيا آهن. سڀ ڪجهه روا ٿي پيو آهي.

ڪرشن راهيءَ احمدآباد مان نڪرندڙ ڪويتا جي خاص نمبر - ڪويتا اسٽ (1972) ۾ ٺيڪ لکيو آهي ته "اڄ جي هن ڪنڌهري سڀيتا هر زاده من ڪي موئن - جو - دڙو ڏنو آهي." الما ۾ ڏار پکي ويٺي آهي. ڪنهن ڳالهه جي پڪ ناهي، مرڻ ماڳ ني غير يقيني آهي. انسان منجهيل ۽ وائڙو بڻجي وڌندڙ طاقت جي چمتڪار کي پاڻيهي پاڻ ڏسي رهيو آهي. جيت هوائي جهاز سر مٿان آسمان جي سليٽ تي تباهي ۽ بربادي‌ءَ جا نشان چٽي اڏامي رهيا آهن. جمنا نديءَ ۾ اڄ جتي اڪا - ڏڪا پوندا هئا ۽ الهي ڪناري تي اڄ جتي ڀڳت ڪوي سورداس پريم جا گيت آلاپيا هئا، اڄ جو شاعر اُتي الهيءَ نديءَ ۾ سگريٽ جا خالي پاڪيٽ وجهي "جهولي لال" ۽ "جمنا مائي جي جئه" پيو ڪري. انسان خالي پاڪيٽ جيان وقت جي لهر تي سهڪي رهيو آهي. هوا بند آهي پاڻي اڙانيل آهي. ڇا سڀئي عناصر ڏڏجي انسان جي خلاف سازش ڪئي آهي؟

ترس، هي هوائي جهاز جيت
آسمان جي سليٽ... الاجي ڇا لکي ويا؟

....

भला ख़ाली पनामा पैकेट त दरिया में फिटा करि
जमुना माई जी जय !
झूले लाल !
टुटल शीशा
भगुल अक्स ! बिगिड़यल सूरतूं !!
छा थींदो ? छा थींदो ?
पाणी लुड़ाटचलु आहे
(ख़ाली पकेट लहरुनि जे सीने ते सहिरी रह्या आहिनि)
हवा बूसाटचल आहे
(जेट स्लेट ते अलाजे छा लिखी व्या आहिनि ?)
ख़बर नाहे .... ख़बर नाहे।
अलाजे ही सभु छा आहे ?

प्रयोग या तजरबे जी इहा प्रवृत्ती अजु कल्ह नई कविता जे नाले सां मशहूर आहे एं उनखे अगिते हली शख़्सी एहसासनि खे ग़ैर-शख़्सियत डुई वधीक एं वधीक अहम्मीयत मिली आहे। नई कविता में तिखे एं सही इज़हार लाइ हक़ीक़ी ज़िन्दगीअ मां खंयल अलामतुनि एं अक्सनि जो इस्तेमाल थिए थो। बोलीअ में सुभात्रिक नमूने कम ईंदड़ किनि अंग्रेज़ी लफ़्ज़नि खां पुणि परहेज़ कान्हे। नज़्म एं नस्र जी बोलीअ में को भेद न रह्यो आहे। इएं थो लगे, शाइर नस्र में लिखण लगा आहिनि। पर पोइ बि छा ऊ नस्र लेखिबो ? न। ऊ त सहज, जानदार दिलचस्प एं गूनागून नस्र आहे। अजु जो शाइर अवाम जी ग़ैर-शाइराना ज़िन्दगीअ जी तर्जुमानी करे थो। अहिड़नि शाइरनि में हरीश वास्वाणीअ जो मुख्य स्थान आहे।

ڀلا خالي ٻداما پئڪيٽ نه درياهه ۾ ڦٽا ڪر
جمنا مائي جي جڳهه!
جهولي لعل!
ٽٽل شيشا
ڀڳل عڪس! بگڙيل صورتون!!
ڇا ٿيندو؟ ڇا ٿيندو؟
پاڻي لڙائيل آهي
(خالي پئڪيٽ لهرن جي سيني تي سهڪي رهيا آهن)
هوا ٻوسائيل آهي
(جيٽ سليمٽ تي الاجي ڇا لکي ويا آهن؟)
خبر ناهي .... خبر ناهي.
الاجي هي سڀ ڇا آهي؟

پريوگ يا تجربي جي اها پرورتي اڄ ڪلهه نئين ڪوتا جي نالي سان مشهور آهي ۽ ان ۾ اڳتي هلي شخصي احساس کي غير شخصيت ڏيئي وڌيڪ ۽ وڌيڪ اهميت ملي آهي. نئين ڪوتا ۾ تکي ۽ صحيح اظهار لاءِ حقيقي زندگيءَ مان ڪنيل علامتن ۽ عڪسن جو استعمال ٿئي ٿو. ٻوليءَ ۾ سڀاوڪ لموڙي ڪم ايندڙ ڪن انگريزي لفظن کان پڻ پرهيز ڪانهي. نظم ۽ نثر جي ٻوليءَ ۾ ڪو ڀيد نه رهيو آهي. ائين ٿو لڳي، شاعر نثر ۾ لکڻ لڳا آهن. پر پوءِ به ڇا اهو نثر ليکبو؟ نه، اهو نه سهج، جاندار، دلچسپ ۽ گوناگون نثر آهي. اڄ جو شاعر عوام جي غير شاعرانه زندگيءَ جي ترجماني ڪري ٿو. اهڙن شاعرن ۾ هريش واسواڻيءَ جو مکيه اسٿان آهي.

اٺو ٻهه

1972 ताईं इंदे-ईंदे, ब्रोलीअ जे खेत्र में हिक ख़ास ग़ाल्हि डांहुं अजख़ुद ध्यान वञे थो। अज़ीज़ जो ग़ज़ल "सिन्धु जी लैला संदो मजनूं" ऐं आजिज़ बेदीअ जी नईं कविता "धृतराष्ट्र" पढ़ी ड्रिसो त तव्हां खे पंहिंजो पाण फ़र्क़ मालूम थींदो। भारत जी सिन्धीअ में तत्सम लफ़्ज़नि ऐं पाकिस्तानी सिन्धीअ में अरबी-फ़ारसी लफ़्ज़नि जो तादाद वध्यलु डिठो व्यो आहे। भाषा जी इहा सुभावीक प्रवृत्ती आहे।

हिन संग्रह में अक्सर कविताऊं शाइरनि जे छप्यल मज्मूअनि तां खंय़ल आहिनि ऐं उन्हनि जे पुठ्यां वास्तेदार मज्मूए जी इशाअत जो साल ज्ञाणायलु आहे। हिन संग्रह जो मक़सद तमाम सिन्धी शाइरनि जा नाला ग़ुणाइणु न आहे। मक़सद इहो आहे त पाठक 1947 खांपोइ जी सिन्धी शाइरीअ जे नमूननि खां रूशनास थ्यनि ऐं मज़ाउनि हिज़ हासिल कनि। ही संग्रह देवनागरी लिपीअ में वि हुअण करे किनि शाइरनि पंहिंजूं कविताऊं शाया करण जी इजाज़त न मोकिली। असांजो मक़सद उन नईं पीढ़ीअ खे पुणि सिन्धी कविता जी वाक़्फ़ीयत ड्रियणु हो, जंहिं देश जी आज़ादीअ खांपोइ देवनागरी लिपीअ वसीले सिख्या वर्ती आहे।

—मोतीलाल जोतवाणी

۱۹۷۲ ڌاري ايندي، ٻوليءَ جي نئين
۾ هڪ خاص ڳالهه ڏانهن ازخود ڌيان وڃي ٿو. عزيز
جو غزل سنڌي جي ”ليليٰ سنڌو مجنون“ ۽ عاجز ٻڌديءَ
جي نئين ڪويتا ”ڌرتراشٽر“ پڙهي ڏسو ته لوهاڪي
پنهنجو پاڻ فرق معلوم ٿيندو. ڀارت جي سنڌيءَ ۾
تتسم لفظن ۽ پاڪستاني سنڌيءَ ۾ عربي فارسي لفظن
جو تعداد وڌيڪ ڏٺو ويو آهي. ڀاشا جي اها سڀاويڪ
پرورتي آهي.

هن سنگرهه ۾ اڪثر ڪويتائون شاعرن جي ڇپيل
مجموعن مان کنيل آهن ۽ انهن جي پٺيان واسطيدار
مجموعي جي اشاعت جو سال ڄاڻايل آهي. هن سنگرهه
جو مقصد تمام سنڌي شاعرن جا نالا ڳڻائڻ نه آهي.
مقصد اهو آهي ته پاٺڪ ۱۹۴۷ کانپوءِ جي سنڌي
شاعريءَ جي لهرن کان روشناس ٿين ۽ منجهانئن حظ حاصل
ڪن. هي سنگرهه ديوناگري لپيءَ ۾ به هئڻ ڪري
ڪن شاعرن پنهنجون ڪويتائون شايع ڪرڻ جي
اجازت نه موڪلي. اسانجو مقصد اُن نئين پيڙهيءَ
کي پڻ سنڌي ڪويتا جي واقفيت ڏيڻ هو، جنهن
ديش جي آزاديءَ کانپوءِ ديوناگري لپيءَ وسيلي سکيا
ورتي آهي.

موتيلال جوتواڻي

اڪواهه

फ़ेहरिस्त

कविताऊं

فهرست

नयूं कविताऊं

نيون ڪويتائون

پڇاڙي

कविताऊं

کوِیتائوں

कीग्रं वसंदा !

सिन्धवासी हिन्द में हिक जाइ कड्हिं वसंदा ग्रला !
मर्ज़, मायूसी, मुसीबत जा सड़ी वेंदा सला।

1. कहिंजो ग़फ़लत खां विर्हाङो थ्यो जलावतनी मिली
था झल्यूं गोल्यूं, लठ्यूं, सड्जूं बेखारी, बाँवला।

2. बुख वधी बेरोज़गारी ऐं जहालत साणु साणु
दिल उदासी ज़र्द चेहरा थी व्या चट हौसला।

3. वाड़ में वाड़चलु वठे ग्राज़ादगीग्र जो कीग्रं मज़ो
कीग्रं ग्राईंदो ग्रड्ींदा मर्ज़ में जे मुब्तला।

4. जिनि डिनो ग्राज़ादगीग्र लइ भेट तन, मन, धन, वतन
दर-ब-दर ऐं बेग्रभे रहंदा उहे केसीं भला ?

5. हिकु ग्रगेई हाल हीणा, ब्यो विछोड़े जे करे
रोज़ु राड़ो, बेक़रारी चौतर्फ़ ग्रा कर्बला।

6. थी रिथे कीग्रं वसाइण जूं रिथूं सरकार डिसु
पर ग्रमल उन जो किथे, ग्रखरी रुगो थ्यनि फ़ैसला।

7. ग्रवर्चाई ऐं सचाई एकता सां, ए सिन्धी
हिक डिहाड़े दूर थी वेंदा दुखनि जा क़ाफ़िला।

8. शल ग्रचे शक्ती, सही सख़्तियूं, नई सिन्धुड़ी ग्रडे
साग्र्यो साहित्य पुणि सभ्यता ऐं कर्यूं क़ाइम कला !

—परसराम रोहड़ा "निमाणो"
(सितार, 1952)

ڪيئن وسندا!!

سنڌ واسي هند ۾ هڪ جاءِ ڪٿي وسندا الا!
مرض، مايوسي، مصيبت جا سڙي ويندا سلا.

١. ڪنهن جي غفلت ڪان ورهاڱو ٿيو جلاوطني ملي
ٿا جهليون گوليون لٺيون، سڏجون ٻيڪاري، ٻالولا.

٢. اسڪ وڌي بيروزگاري ۽ جهالت ساڻ ساڻ
دل اداسي زرد چهرا ٿي ويا پست حوصلا.

٣. واڙ ۾ واڙيل وٺي آزاديءَ جو ڪيئن مزو
ڪئين آڻيندو اڻيندا مرض ۾ جي مبتلا.

٤ جن ڏنو آزاديءَ ليءِ همت تن، من، ڌن، وطن
در بدر ۽ بي اجهي رهندا اهي ڪيسين ڀلا؟

٥. هڪ اڪيلي حال هٿيا ٻيو وڇوڙي جي ڪري
روح راڙو بيقراري چوطرف آ ڪربلا.

٦ ٿي رٿي ڪميٽي وسائڻ جون رٿون سرڪار ڏس
پر عمل ان جو ڪٿي اڪري رکيو ٿين فيصلا.

٧. اورچائي ۽ سچائي ايڪتا سان، اي سنڌي
هڪ ڏهاڙي دور ٿي ويندا دکن جا قافلا.

٨. شال اڄي شڪتي، سچي سخنيون، انهن سنڌڙي اڏي
سانگهو ساهتيہ ٻڻ سچيتا ۽ ڪرئون قائم ڪلا!

پرسرام روهڙا "نمانو"
(سعار، ١٩٥٢)

सुबह आयो

नएं सूरज नओं प्रकाश फहिलायो,
सुबह आयो !

टुटी प्यो रात जो सपनो, ज़मीं छा, आसमां जाग्यो,
नशो मुखिड़चुनि जे नेणानि मां निहोड़े गुलिस्तान जाग्यो,
खणी अजु ग़ाट ऊचा खेत ड़िसु किअं मुस्कराइनि था,
शिकारी शर्मिंदा थी व्या, पखीअड़ा गीत ग़ाइनि था ।

खट्यो इन्साफ़ आख़िर, ज़ुल्म हारायो,
सुबह आयो !

हटाए जह्ल जी चादर, सुतल इन्सान जाग़ी प्या,
विसूड़ल मन वणी बाग़ी, भरम जा बंद टोड़े व्या,
सद्युनि खां चुप ज़बानुनि में नओं आवाज़ आयो आ,
ए इन्सानो ! नएं आवाज़ खे रोकणु अजायो आ ।

कयों स्वागत, नओं अजु दौर दुहरायो,
सुबह आयो !

अड़े चोर्युनि करण, धाड़नि हणण जो वक़्त गुज़िरी व्यो,
भज़ी व्या भूत, ड़ोहनि एं गुनाहनि जो ड़ीओ गुल थ्यो,
उजाले पाप जा ड़ेरा बिनिह खोले कया ज़ाहिर,
किन्युनि रीत्युनि रिवाजनि खे कढो छो कीन था बाहिर ?

उथो ! तहज़ीब कुहिनीअ खे वि दफ़नायो,
सुबह आयो !

صبوح آيو

نئين سورج نئون پرڪاش ڦهلايو،
صبوح آيو!

اٿي ٿيو ٻاس جو سپنو، زمين ڇا، آسمان جاڳيو،
اهو مڪڙين جي ٽڙڻ مان، هوڙي گلستان جاڳيو،
ڪٽي اڄ ڳاٽ اوچا ڪيس ڏس ڪئن مسڪرائن ٿا،
شڪاري شرمندا ٿي ويا، پکڙا ڪيس ڳائن ٿا.

ڪٽيو انصاف آخر، ظلم هارايو،
صبوح آيو!

هٽائي جهل جي چادر، سڄل انسان جاڳي پيا،
وسوڙل من پٽي باغي، ڌرم جا بند ٽوڙي ويا،
صدين کان چپ زبانن ۾ نئون آواز آيو آ،
اي انسانو! نئين آواز کي روڪڻ اجايو آ.

ڪريو سواگت، نئون اڄ دور دهرايو،
صبوح آيو!

اڙي چورن ڪرڻ، ذاتن هٽڻ جو وقت گذري ويو،
اچي ويا ٻاهوس، ڏوهن ۽ گناهن جو ڏيئو گل ٿيو،
اجالي پاپ جا ڏيرا ٻڌا، ڪولي ڪيا ظاهر،
ڪئين رتين راڄن کي ڪيو ڇو ڪين ٿا ٻاهر؟

اٿو! تهذيب کهڙي کي ٻ دفنايو،
صبوح آيو!

हलो स्नान लइ हाणे, पवित्र प्रेम सागर ड्रु,
वधो विहिंजी थी हिक जहिड़ा, नईं दुनिया जे मंदिर ड्रु,
न पूज़ियो हाणि पत्थर खे, कयों पूज़ा किसाननि जी,
किसाननि, पोरिह्यतनि, मज़दूर-मेहनतकश जवाननि जी।

मिली इन्सानियत जी आरती ग़ायो,
सुबह आयो !

—गोवर्धन "भारती"
(गुल एँ मुखिड़यूं, 1955)

هلو سڀان ايءَ هاڻي، پنھنجو پاڻ ساگر ڏي،
وڏو وهنجي لڳي هڪ جهڙا، انهن دليا جي مدد ڏي،
۽ پوڄڻو هاڻ پڙ کي، هر پو پوڄا کسان جي،
کسان، پورهيتن، مزدور - محنت کش جوان جي.

ملي انسانيت جي آرلي ڳاڻو،
صبوح آيو!

گوورڌن "ڀارتي"
(کل ۾ مڪڙ اون، ١٩٥٥)

अशरफ़ चइजि न पदु इन्सानी

आदम उपज्यो कहिड़े दम मां
वहम ख़ुशीअ मां या कहिं ग़म मां
मर्ज़ मुसीबत ऐं मातम म
दम जी वांदि न ग़म जे कम मां
ढेर ग़मनि जा हिकिड़ी दिल में
मनुष अची फाथो मुश्किल में

वण टिण में आ बोद बहारी
पख्युनि में आ सूंहं सघारी
हर हंधि हर शै में हुबुकारी
क़ुदरत क़ाइम आहि क़रारी
सुस्तीअ जो सभु सांग सभाग़ो
मेहनतकश इन्सान अभाग़ो

नाहक़ वेठो पाणु पडाए
सृष्टीअ जो सरमौर सडाए
क़ुदरत बेवस खेसि बणाए
हैवाननि ते हर्ख लुटाए
वाह अता कयो गुण-ग़ाराणो
जाम मिल्युसि जीअ जो झोराणो

اشرف ڇو نہ ٻڌ انساني

آدم ايهو ڪهڙي دم مان
وهم خوشيءَ مان يا ڪنهن غم مان
مرض مصيبت ۽ ماتم مان
دم جي والاه غم جي ڪم مان
پير غمن جا هڪڙي دل ۾
مٿش اچي ڦاٿو مشڪل ۾

وٽ نٽ ۾ آ ٻوڌ ٻهاري
پڪين ۾ آ سونهن سگهاري
هر هنڌ هر شيءِ ۾ هٻڪاري
قدرت قائم آهہ قراري
سمنٽيءَ جو سڀ ساڳ سياڳو
محنت ڪش انسان اڀاڳو

لاحق وٺو پاڻ ٻڌائي
سرشتيءَ جو سرور سڏائي
قدرت ٻوس ڪيس اٽائي
حيوان اِي هرڪ اٿائي
واهہ عطا ڪيو ٿيڻ - ڳارائو
جام ملٻس جيءَ جو جهورائو

इन्सानी सिर सव सव भेरा
फेराट्युनि में खाए फेरा
सव सव मर्कज़ सव सव घेरा
वावेला में वडु वडेरा
अक़ुल डेई आराम खस्याईं
आज़ारी एहसास डिनाईं

झंग जनावर सभु सरहाई
नहर नदी आ ढव में ढाई
मौज मज़े जी विस में वाई
सुख में, सुख जी सार न काई
सभ खां आख़िर, अव्वल सडाए
छिन-पट खां कीअं पाणु छडाए

हैवाननि में रंज न हस्रत
बेसमुझनि में होश न हिकमत
क़ुदरत जी वह वाह विरहासत
क़ुदरत में ख़ुद जह्ल जहालत
'फ़ानी' थी ग़म जो गुज़िरानी
अश्रफ़ चइजि न पदु इन्सानी

— खीअलदास "फ़ानी"
(सिन्धु-समाज टिमाही,
1958)

انساني سر سو سو ڦيرا
ڦيرائين ٿو ڪالڪي ڦيرا
سو سو مرڪز سو سو گهيرا
واويلا ٿو وڏ وڏيرا
عقل ڏني آرام ڪيائين
آزاري احساس ڏنائين

جهنگ جناور سڀ سرهائي
اهڙ انڌي آ ڀو ٿو ڀائي
موج مزي جي وس ٿو وائي
سک ٻه سک جي سار نه ڪائي
سڀ ڪان آخر، اول سڏائي
ڇن ٻت ڪان ڪٿن پاڻ ڇڏائي

حيوان ٿو راڄ نه حرمت
اي سمجهن ٿو هوش نه حڪمت
قدرت جو وهه، واهه، ورهاست
قدرت ٿو خود جهل جهالت
"فاني" ٿي غم جو گذرالي
اشرف ڇنج نه ٻڌ انساني

ڪمالداس "فاني"
(سدو سماج نماڻي،
١٩٥٨)

आत्मिक चमत्कार

मोटी आयो मुंद ते वाह वाह ड्रींहुं सुठो,
माता पातो गोद में मोहन मीर मिठो,
धार्यनि संदीअ दिल खे क़ुर्बत साणु कुठो,
नेणनि नेठि ड्रिठो, सूरज आज़ादीअ संदो।

सूरज आज़ादीअ संदो उभिरी जीअं आयो,
वेर्युनि विधो वेर खां कुल्फ़त जो पायो,
ख़ून, ख़राबी, ज़ुल्म जो, सहजे थ्यो सायो,
घरि घरि ड्रोलाओ, मुल्क अंदर मांधाणु प्यो।

मुल्क अंदर मांधाणु प्यो, चौड्रिस चौधारी,
दीवाननि कीअं दौर कयो नाहक़ जो जारी,
कड़िक्यो को आफ़त संदो बादल हो भारी,
फ़िरंगीअ कापारी, चोट लग्राई चैन में।

चोट लग्राई चैन में, गान्धीअ खे गहरी,
भंभट उभिर्या बाहि जा बाउ लग्री क़हरी,
लुड़िक वहाए नेण मां, आब करे वहरी,
मुश्किल हीअ अहिड़ी कान सुझी हुई संत खे।

कान सुझी हुई संत खे, हालत हैबत जी,
वर्पा जाइ बजाइ थी, नगरी बेदर्दी,
ख़ून वह्यो को मुल्क जो, आई बेदादी,
रोकण बरबादी, निकिरी सो निर्वार थ्यो।

آتمڪ چمتڪار

موني آيو مند لئي واهه واهه ڏيهن سندو،
ماتا پاتو گود ۾ موهن مهر مٺو،
ڌارين سنديءَ دل کي ڦرهٽ ساڻ ڪٺو،
اڀريو ايئن ڏٺو، سورج آزاديءَ سندو.

سورج آزاديءَ سندو اڀري جنهن آيو،
ويرن وڏو ويڙ ذات ڪلفت جو پايو،
خون، خرابي، ظلم جو، سڀجي ٿيو سعو،
گهر گهر ڏولائو، ملڪ اندر ماتم پيو.

ملڪ اندر ماتم پيو، چوڏس چوڌاري،
ديوان ڪنهن دور ڪيو الحق جو جاري،
ڪڙڪيو ڪو آفت سندو بادل هو ڀاري،
ڦرائڪيءَ ڪا پاري، چوٽ لڳائي جنهن ۾.

چوٽ لڳائي جنهن ۾ گانڌيءَ کي گهري،
هيٺ آيو پاهه جا واڪا لڳي ٿهري،
لڙڪ وهائي اڄ ماڻ، آب ڪري اڀري،
مشڪل هيءَ اهڙي ڪالهه سڀجي هئي سمت ڪي.

ڪالهه سڀجي هئي سمت ڪي، حالت همت جي،
ڀريا جام اڄ ٿي، انگري بي دردي،
خون وهيو ڪو خلق جو، آئي اي دادي،
روڪڻ برابادي، لکري سو ڀروار ٿيو.

निकिरी सो निर्वार थ्यो, पेरें पंध उथी,
कोन खंयाईं पाण सां लश्कर का साथी,
गाडी मोटर कीन की, घोड़ो या हाथी,
सवारी तंहिं लाथी, नोखाली जे नरक में ।

नोखाली जे नरक में बापूअ कयो डेरो,
विधो आत्म बल सां संत उते घेरो'
खून्युनि संदी दिल में आयो पो फेरो,
मंदो एं मेरो, पापी पशेमान थ्यो ।

पापी पशेमान थ्यो; वेर वध्यो अगिते,
ख़बरूं आयूं ख़ून जू काली घाट जिते,
ख़ून वहायो अंध मां क़हरी काल कुत्ते,
पहुतो पाण उते, साथु छडाई पोइतां ।

साथु छडाई पोइतां, कलकत्ते आयो,
मुहबत जे मेहराण मां, बादल वर्सायो,
तस्यो डेई जान खे, सिर खे सहसायो,
सफलो थ्यो लायो, आयो अंत जुनून जो ।

आयो अंत जुनून जो, शस्त्र ज़ाहिर थ्या,
पेरनि पकड़े प्रीति मां, मंत अग्यां उछिल्या,
लगी हैरत हर कंहीं, वह वह नाद वगा,
प्रीतिऊं पाण पुगा, कार्ज कुल 'गुमनाम' जा ।

— बलदेव गाजरा "गुमनाम"
(तराना एं फूल, 1959)

اڪري سو سوار ٿيو، پرين پنڌ آئي،
ڪونه ڪنيائين پاڻ سان لشڪر ڪو ساٿي،
گاڏي موٽر ڪمڪي، گهوڙو يا هاٿي،
سواري لنهن لائي، اوڪاليءَ جي لڪ ۾.

اوڪاليءَ جي لڪ ۾ پاپوءَ ڪيو ڏيرو،
وڌو آرام پل سان سنت آلي ڌيرو،
خولهن سندي دل ۾ آيو پٺو ڦيرو،
ٽمدو ۽ ميرو، پاپي پشيمان ٿيو.

پاپي پشيمان ٿيو؛ وهر وڏو اڳئي،
خبرون آيون خون جون ڪالي گهاٽ جتي،
خون وهايو آنڌ مان ڦهري ڪال ڪتي،
ڀٽو پاڻ آئي، سانت ڇڏيائين پوٽنان.

سانت ڇڏيائين پوٽنان، ڪلڪتي آيو،
محبت جي مهراڻ مان، بادل برسايو،
نسيو ڏنئي جان کي، سر کي سمهايو،
سقلو ٿيو لايو، آيو امت جنون جو.

آيو امت جنون جو، شستر ظاهر ٿيا
پيرن پڪڙي پريت مان، سنت اڳيان آڇليا
اڳي حيرت هر ڪنهين، وهه وهه لال وڃا،
پرينئون پاڻ پڳا، ڪارج ڪل گمنام جا.

بلديو گاجرا "گمنام"
(ڏرانا ۽ ڦول، ١٩٥٩)

तराईल

ही संदमि ज़ख़्म-जिगर हूंद सिघो भर्जी पवनि
प्यार मां जे रुगो हिकवार निहारीं मूं डे ।

तुंहिंजे नेणनि मां जे नफ़रत जा उला निकिरी वञनि
ही संदमि ज़ख़्म-जिगर हूंद सिघो भर्जी पवनि ।

मुंहिंजे सुडिकनि मां बि ग्रचु गीत नवां बणिजी पवनि
जे तूं नेणनि में भरे प्यार निहारीं मूं डे ।

ही संदमि ज़ख़्म-जिगर हूंद सिघो भर्जी पवनि
प्यार मां जे रुगो हिकवार निहारीं मूं डे ।

—हरीकान्त
(सिन्धु-समाज टिमाही, 1959)

तराईल

ही संदमि ज़ख़्म-जिगर हूंद सिघो भर्जी पवनि
प्यार मां जे रुगो हिकवार निहारीं मूं ड॒े।

तुंहिंजे नेणनि मां जे नफ़रत जा उला निकिरी वञनि
ही संदमि ज़ख़्म-जिगर हूंद सिघो भर्जी पवनि।

मुंहिंजे सुडिकनि मां बि ग॒चु गीत नवां बणिजी पवनि
जे तूं नेणनि में भरे प्यार निहारीं मूं ड॒े।

ही संदमि ज़ख़्म-जिगर हूंद सिघो भर्जी पवनि
प्यार मां जे रुगो हिकवार निहारीं मूं ड॒े।

—हरीकान्त
(सिन्धु-समाज टिमाही, 1959)

ग़ज़ल

बुल्बुल ए गुलिस्तान जूं ग़ाल्हियूं न कयों,
बेसूद बयाबान जूं ग़ाल्हियूं न कयों !

घरु पंहिंजो संभाल्यो की संदसि फ़िक्र कयों,
हिति रूस ए जापान जूं ग़ाल्हियूं न कयों !

हिति साहु पटण लइ वि मिले वक़्त न थो,
पर मौत ए शमशान जूँ ग़ाल्हियूं न कयों !

जे पेट बुख्यो आहि त किअं ऐश कबो,
अजु ऐश ए रोमान जूं ग़ाल्हियूं न कयों !

मेहनत जे करे कोई त ग़ुर्बत वि मिटे,
बेकार में भगुवान जूं ग़ाल्हियूं न कयों !

--हूंदराज "सिकायल"
(सिन्धु-समाज टिमाही, 1959)

غزل

بلبل ۽ گلستان جون ڳالهيون نه ڪريو،
بي سود بيابان جون ڳالهيون نه ڪريو!

گهر پنهنجو سنڀاليو ڪي سنڌس فڪر ڪريو،
هت روس ۽ جاپان جون ڳالهيون نه ڪريو!

هت ساهه پٽڻ لئي نه ملي وقت اٿو،
پر موت ۽ شمشان جون ڳالهيون نه ڪريو!

جي پيٽ بکيو آهه ته ڪيئن عيش ڪبو،
اڄ عيش ۽ رومان جون ڳالهيون نه ڪريو!

محنت جي ڪري ڪوني نه غربت ۾ مٺي،
بيڪار ۽ ڀڳوان جون ڳالهيون نه ڪريو!

هوندراج ”دکايل“
(سنڌو سماج ٽماهي، ١٩٥٩)

छो भला आँसू वहायां ?

1. मां दुखी नाह्यां अकेलो,
ही सजो संसार आहे;
आ' दुखी हर जवान पोढ़ो,
एं दुखी नर नार आहे।
पोइ भला मां ई फ़क़त छो,
पाण डुख्यो सडायां ?
छो भला आँसू वहायां ?

2. थो रुए हर को प्राणी
दर्द दिल जा अश्क ग़ाड़े;
को रुए थो शांत सुर में,
को रुए थो हियाउ फाड़े।
मां रुगो पो पाण ते छो
दाग़ कमज़ोरीअ जो लायां ?
छो भला आँसू वहायां ?

3. को करे थो बार हल्को,
कुंड में हंजूं थो हारे;
ख़ल्क़ जे साम्हूं अचे थो
मुंहुं मखे, ख़ुद खे संवारे।
ठीक नाहे ख़ल्क़ अग्यां
पाण खे पाणही खिलायां !
छो भला आँसू वहायां ?

ڇو پيلا آنسو وهايان؟

١. مان ڏکي ناهيان اڪيلو،
هي سڄو سنسار آهي؛
آ ڏکي هر جوان پوڙهو،
۽ ڏکي نر نار آهي.
پوءِ پيلا مان ئي فقط ڇو
پاڻ کي ڏکيو سڏايان؟
ڇو پيلا آنسو وهايان؟

٢. ٿو رئي هر ڪو پراڻي
درد دل جا اشڪ ڳاڙي؛
ڪو رئي ٿو شامت سر ۾،
ڪو رئي ٿو دنيا جي ڏاڙي.
مان رڳو پوءِ پاڻ لئي ڇو
داغ ڪمزوريءَ جو لايان؟
ڇو پيلا آنسو وهايان؟

٣ ڪو ڪري ٿو بار هلڪو،
ڪنڌ ۾ هنجون ٿو هاري؛
خلق جي سامهون اچي ٿو
مُنهن مٿي خود کي سنواري.
نيڪ ناهي خلق اڳيان
پاڻ کي پاڻهي ڏلايان!
ڇو پيلا آنسو وهايان؟

4 ग़ोढ़ा ग़ाड़णु ड्रोह नाहे
मनुष खे रुग्रणो वि ग्राहे ;
पर रुग़ो रुग्रणो न ग्राहे,
मुश्कणो खिलणो बि ग्राहे।
सोज़ नाहे ज़िन्दगी ई
सोज़ जी छो धुन लग़ायां?
छो भला ग्राँसू वहायां ?

5. रोउ दिल तूं, रोउ भ ल तूं,
केरु तो सां कोन रुग्रंदो।
ग्राणि चेहरे ते ख़ुशी, जग़ु
तो सां गडि्जी टहक ड्रींदो।
मसर्रत हस्रत मस्रत संदो ही
भेदु मां दिल सां हंडायां,
छो भला ग्राँसू वहायां ?

6. ख़ातिमो थ्यो तमन्ना जो
ऐं सुपन संसार सारो।
दिल संदे ग्राकाश में किथि
ग्राहि ग्राशा जो सितारो।
ज़िन्दगीग्र खे खेल समुझ्युमि,
छो न ग़लतीग्र खे सुधार्यां ?
छो भला ां वहायां ?

٤. ڳوڙها ڳاڙڻ ڏوهه ناهي
منش کي رئڻو به آهي؛
پر رڳو رئڻو نه آهي،
مشڪڻو ڪلڻو به آهي.
سوز ناهي زندگي ئي
سوز جي ڇو ٿن ڳايان؟
ڇو ڀلا آنسو وهايان؟

٥. روح دل تون، روح ڀل تون،
ڪيئن توسان ڪو نه رهندو.
آڻ ڇهري ٿي خوشي، جڳ
توسان گڏجي ٽهڪ ڏيندو.
حسرت مسرت سندو هي
ڀيد مان دل سان هنبايان،
ڇو ڀلا آنسو وهايان؟

٦. خالق ٿيو لمحا جو
۽ سڄڻ سنسار سارو.
دل سندي آڪاش ۾ ڪٿ
آهه آشا جو ستارو؟
زندگيءَ کي کيل سمجهيم،
ڇو نه غلطيءَ کي سڌاريان؟
ڇو ڀلا آنسو وهايان؟

7. कशमकश आहे ज़रूरी;
दिल जी मज़बूती ज़रूरी;
ख़ुशी माणण लाइ घुर्जे
पेरु पुख़्तो, मन सबूरी।
छो न मस्रत जे मिलण जो,
ही बि नुस्ख़ो आज़मायां ?
छो भला आँसू वहायां ?

—अमरलाल साधवाणी
(सिन्धु-समाज टिमाही, 1959)

۷. ڪشمڪش آهي ضروري؛
دل جي مضبوطي ضروري؛
خوشي ماڻڻ لاءِ گهرجي
ٻيو پختو، من صبوري.
ڇو نه مسرت جي ملڪ جو،
هي نه نسخو آزمايان؟
ڇو ڀلا آسون وهايان؟

امرلعل ساڌواڻي
(سنڌو سماج ٽماهي، ۱۹۵۹)

रखिड़ी (गीत)

भावना फूले फरे
रक्षा-बुंधन जी अमर जोती जरे,
भाव जागु भाउ जो, शल भेणु जो हृदो भरे;
भावना फूल फरे ।

1. तंदु कचिड़ी नाहि रखिड़ीअ जी, मगर मामता जी डोर,
जंहिं में आहे कर्त्तव्य जे पालना जी साखना,
कल्पना सखिणी न आहे पर अमर आशा जी डोर,
हर्ष जी आई घड़ी, थो मन कुडे !
दिल थी पींघे में उमंगनि जे लुडे !
दिल उछल सां नेण-जल बणिजी थी अखिड़ियुनि में तरे;
भावना फूले फरे ।

2. आहि रखिड़ीअ में समायल, भेणु जी आशीर्वाद,
जंहिं में भावुकता सां शामिल प्रेम वारी वेदना,
थी डियारे सख़्त आपति जे समे स्वमान याद ।
फ़र्ज़ क़ुर्बानीअ सां जोड़े संग थो
साह खां प्यारो लगे ख़ुद नंग थो,
हौसलो रखिड़ी डुई, थी सुर्ख़रू जग में करे;
भावना फूले फरे ।

رڪڙي (گيت)

پاوا ڦولي ڦري
رڪشا ٻڌن جي امر جولي جهري،
پاءُ جاڳي پاڻ جو، شل پيٽ جو هردو ٻري؛
پاوا ڦولي ڦري.

١. ننڍ ڪڇڙي ناهه رڪڙيءَ جي، مگر ممتا جي ڏور؛
جنهن ۾ آهي ڪرلوڻ جي پالنا جي ساڪما،
ڪلپنا سڪڻي نه آهي پر امر آشا جي ڏور،
هرش جي آئي گهڙي، تو ۾ ڪڏي!
دل تي ٻهنگهي ۾ امنگن جي لڏي!
دل اُڇل سان نيڻ-جل ڇٽي تي اکڙين ۾ ٽري؛
پاوا ڦولي ڦري.

٢. آهه رڪڙيءَ ۾ سمايل، پيٽ جي آشيرواد،
جنهن ۾ پاوڪتا سان شامل پريم واري ويدنا،
تي ڏهاري سخت آپهه جي سهي سومان ياد.
فرض قربانيءَ سان جوڙي سنگ تو،
ساهه ڪان پيارو لڳي خود انگ تو،
حوصلو رڪڙي ڏئي، تي سرخرو جڳ ۾ ڪري؛
پاوا ڦولي ڦري.

3. आङुर्यूं नाज़िक विझनि थ्यूं जान, बुत बेजान में,
गंढि रक्षा जी जागाए पवित्र चाह्ना,
रेशमी सोटी तंदूं आण्यो छड़िनि ईमान में।

भेणु जी रक्षा लइ दिल थी बेक़रार,
आबरूअ सदिक़े थिए थी तार तार।

थो 'दुखायल' भाउ मुर्की भेणु जे ख़ातिर मरे,
भावना फूले फरे।

—हूंदराज ''दुखायल''
(1962)

٣. آڱرين نازڪ وجهن ٽيون جان، ٻت ٻيڄان ۾،
ڳنڍي رکشا جي ڄاڳائي پوتر چاهنا،
ريشمي سوٽي ڌاڳون آڻيو ڇڏن ايمان ۾.

ڀيڻ جي رکشا ليءِ دل ٿي بيقرار،
آبروءَ صدقي ٿئي ٿي ڦار ڦار.

تو "دکايل" پاڻ مرکي ڀيڻ جي خاطر مري،
پاونا ڦولي ڦري.

هوندراج "دکايل"
(١٩٦٢)

अचु खणी हाणे कठोर (गीत)

अचु खणी हाणे कठोर

1. ड्रिसु त जोभन जे पलव में, सुमन स्वागत जा भरे
कोअं सुन्दरता दरि खड़ी, वीठी निहारे तुंहिंजो ठौर
अचु खणी हाणे कठोर

2. हीअ वसंती मुंद अला ! दिल अकेली कीअं भला
रहणु चाहींदी चउ कंहिंजी, बिन सज्रण जे संझ-भोर
अचु खणी हाणे कठोर

3. दिल में तुंहिंजी वार वार—हर घड़ी हर वक़्त सार
थी करे आलो अख्युनि खे, छड्रि रुसामो चित्तचोर
अचु खणी हाणे कठोर

4. जड्रि अकेली रात में—हलचल उथे जज़्बात में
मुँहुँ विहाणे में विझी, मुड्रिका भरे थो दिल-चकोर
अचु खणी हाणे कठोर

5. मिन्थ हाणे मञु खणी, स्नेह जा सड्रिड़ा सुणी
अचु अङण पेही पिरीं, कंत राधा जा किशोर
अचु खणी हाणे कठोर

—अजीत किशोर
(1962)

اڄ ڪٿي هاڻي ڪنور (گيت)

اڄ ڪٿي هاڻي ڪنور

١. ڏس ته جوڀن جي ٻاو ۾، ڪهڙن سواگت جا ٻري
ڪيڏين سندر ڏاڍر ڏڙي، اهڙي اهاري لهندو نور
اڄ ڪٿي هاڻي ڪنور

٢. هيءَ بسنتي مند الا! دل اڪيلي، ڪيڏين پلا
وڻ ڇاهندي چڱ ڪنهنجي، اِن سڄڻ جي سنجهه ٻور
اڄ ڪٿي هاڻي ڪنور

٣. دل ۾ تنهنجي ٻار ٻار - هر گهڙي هر وقت سار
ٿي ڪري آلو اکين کي، چڏ رساڻو چت چور
اڄ ڪٿي هاڻي ڪنور

٤. جڏ اڪيلي رات ۾ - هلچل آئي جڏهاڻ ۾
منهن وهاڻي ۾ وجهي، سڏ ڪا ٻري ٿو دل چڪور
اڄ ڪٿي هاڻي ڪنور

٥. مست هاڻي مڃ ڪٿي - سنهڙ جا سڏ ڙا سٽي
اڄ اڳڻ ٻهي ٻران، ڪنت راڻا جا ڪشور
اڄ ڪٿي هاڻي ڪنور

اجمت ڪشور
(١٩٦٢)

देश भगुत जो ख़त

1. अमा, ओ मुंहिंजी अमा ! रख्युमि मुल्क जो मान
खीर मल्हायुमि तुंहिंजो, साखी सभु जहान
मरण वेले मन में, अथमि अभिमान
मां देश मथां क़ुर्बान, तूं मुर्की जेड़ुचुनि विच में।

2. वावल, सूह्यं आह्यां, जोधो जुंग जवान
सीने ते ख़िलंदे सठमि, गोलीअ जो नीशान
मूखे पंहिंजे मौत जो, कोन्हे को अरमान
ज़ाणे थो भगुवान, हसंदे थो हितां हलां।

3. देवी ! मुंहिंजे दिल जी, हंजूं हड़ु म हारि
सुड़िका भरे सोज़ मां, सजनी कीन संभारि
तिलक लगुाए ख़ून जो, उथी सींधि संवारि
ओ कूंधर जी कुँवारि ! तूं किअं गूंदर घारिएं ?

4. कहिड़नि अखरनि में डुयां, अदी, ख़बर-चार ?
दुश्मन जूं तोबूं तिख्यूं, हैवतनाक हथियार
टैंकूं जबल जेड़ुयूं, मेलनि ते जनि मार
त बि व्या खाई हार, रिथूं व्यनि रद्द थी।

5. साथी ! कहिड़ो मोकिल्यां, हितां जो अहवाल
अची डिसु दुश्मन जो कहिड़ो आ बदहाल
मची वेयुनि वटि व्यो जिन्सी बुाएताल
हर हिक हिन्द जो लाल, टीह मारे पोइ थो मरे !

— राम पंजवाणी
(1965)

ديش ڀڳت جو خط

١. امان، او منهنجي امان! رحم مالڪ جو مٿان
ڪم ملهايم منهنجو، ساٿي سڀ جهان
مرڻ ويلي من ۾، اٿم ايمان
ماءُ ديش مٿان قربان، تون مرڪڻ جيئڻ وچ ۾.

٢. بابل! سورهيه آهيان، جوڌو جنگ جوان
سيني لئي کاڌي سٽم، گوليءَ جو نشان
موٽي منهنجي موت جو، ڪوڙهي ڪو ارمان
چاڙهي تو ڀڳوان، هسندي تو هٿان هلان.

٣. ڀاوي! منهنجي دل جي، هڏون هڏ ۾ هار
سڏڪا ڀري سوز مان، سڄي ڪين سنڀار
لالڪ لڳائي خون جو، آئي سهڻي سنوار
او ڪونڌر جي ڪنوار! تون ڪئين گوندر گهارئين؟

٤. ڪهڙن اکرن ۾ ڏيان، ادي خبر چار؟
دشمن جون ٽوليون ٽڪيون، هيبت ناڪ هٿيار
ٽٽڪون ڪٻل جيڏيون، ميلن لئي جن مار
ٽٻ ويا ڪانئي هار، رتون وهن رڊ ٿي.

٥ ساٿي! ڪهڙو موڪليان، هتان جو احوال
اڄ ڏس دشمن جو ڪهڙو آهه حال
مڃي وارڻ وٽ ويو، جنسي پاتال
هر هڪ هند جو لعل، ٿيهه ماري پوءِ تو مري.

رام پنجواڻي
(١٩٦٥)

वाई

टिड़ी पेई अजु अहं खे टोड़े, अगु अग़री अग़राई थी,
रंग विरंगी दुनिया में अजु चौधर ज़ुगुकि नवाई थी,
हीअ मिठिड़ी मिठिड़ी वाई थी।

प्यार हुस्न, नव रूप-रंग में, उलिझी आह, ख़ुदाई थी,
हीअ मिठिड़ी मिठिड़ी वाई थी।

हीर सुग़न्धी हित जीवन में आई, ज़ुणुकि सरहाई थी,
हीअ मिठिड़ी मिठिड़ी वाई थी।

ख़ुश्यूं उथ्यूं कर मोड़े, तंहिं विच शर्माए तन्हाई थी,
हीअ मिठिड़ी मिठिड़ी वाई थी।

जिनि जीवन जो रंग न ज़ातो, तिनि लाइ हिति हल्काई थी,
हीअ मिठिड़ी मिठिड़ी वाई थी।

कीअं वणां मां "प्यासी", जडहिं मुंहिंजी उत्र-अघाई थी,
हीअ मिठिड़ी मिठिड़ी वाई थी।

—कमल केवलरामाणी "प्यासी"
(1965)

وائي

ٽڙي پئي اڄ اهڙ کي ٽوڙي، اڳ، اڳري اڳراڻي ٿي،
رنگ، ارنگي دلڙا ۾ اڄ چوڌر ڇٽڪ لوائي ٿي،
هيءَ مٺڙي مٺڙي وائي ٿي.

پيار، حسن، لئه، روپ رنگ ۾، اُلجهي آهه، خدائي ٿي،
هيءَ مٺڙي مٺڙي وائي ٿي.

هيئر سڳنڌي هن جيون ۾ آئي، ڇٽڪ سرهائي ٿي،
هيءَ مٺري مٺڙي وائي ٿي،

خوشبون اڻيون ڪر موڙي، لڏهن وچ شرمالي لڄائي ٿي،
هيءَ مٺڙي مٺڙي وائي ٿي.

جن جيون جو رنگ اڄاتو، تن لاءِ هت هلڪائي ٿي،
هيءَ مٺڙي مٺڙي وائي ٿي.

ڪيئن ٻڌان مان ”پياسي“، جڏهن مهڪي اڄ اَڌهائي ٿي،
هيءَ مٺڙي مٺڙي وائي ٿي.

ڪمل ڪيولراماڻي ”پياسي“
(١٩٦٥)

ग़ज़ल

न हिन्दू ईसाई मुसलमान थींदो,
वरी नेठि इन्सान, इन्सान थींदो ।

मथां रात कारी एं रस्तो वि मुश्किल,
सितारनि जो पहरो निगहवान थींदो ।

जो मज़्लूम ते ज़ुल्म ज़ालिम करे थो,
पंहिंजो पाण ते हू पशेमान थींदो ।

ॾझो ही फिरनि ॾींहं महकूम जा था,
सदाईं न ह़ाकिम जो फ़र्मान थींदो ।

मशीनूं वि रहंद्यूं एं चर्ख़ा बि हूंदा,
कॾहिं कीन इन्सान बेजान थींदो ।

जॾहिं दर्द तुंहिंजो वधी वेंदो ह़द खां,
तॾहिं दर्द-दिल, दिल जो दर्मान थींदो ।

भली हुस्न माणो करे इश्क़ सां अजु,
सुभां इश्क़ तां हुस्न क़ुर्बान थींदो ।

किथे जेकॾहिं क़ुर्ब वारा के गॾिबा,
असांजो वि "घायल" चङो मान थींदो ।

—गोवर्धन शर्मा "घायल"
(कूंजूं थ्यूं कुणिकनि, 1967)

غزل

نه هندو عيسائي مسلمان ٿيندو،
وري سڀ انسان، انسان ٿيندو.

مٿان راهه ڪاري ۽ رستو نه مشڪل،
سچارن جو ٻيڙو نگهبان ٿيندو.

جو مظلوم تي ظلم ظالم ڪري ٿو،
پنهنجو پاڻ تي هو پشيمان ٿيندو.

اجهو هي قوم ڏينهن محڪوم جا ٿا،
سدائين نه حاڪم جو فرمان ٿيندو.

مشينون نه رهنديون ۽ چرخا نه هوندا،
ڪڏهن ڪين انسان بيجان ٿيندو.

جڏهن درد پنهنجو وڌي ويندو حد کان،
تڏهن درد-دل، دل جو درمان ٿيندو.

ڀلي حسن ماٺو ڪري عشق سان اڄ،
سڀان عشق تان حسن قربان ٿيندو.

ڪٿي جيڪڏهن قرب وارا ڪي گڏ ٿيا،
اسانجو نه، "گهايل" چڱو مان ٿيندو.

گوورڌن شرما "گهايل"
(ڪواڄون ٿيون ڪٽڪن، ١٩٦٧)

ज़िन्दगीअ जो क़ारवाँ

हल्यो हले ही ज़िन्दगीअ जो कारवां हल्यो हले

1. क़दम-क़दम ते जे मुश्किल अचे त छा ?
तूफ़ान एं आंध्यूं बि जे शामिल हुजनि त छा ?
मुंहुं मुड़िस थी ड्रींदासीं,
हर हर इएं चवंदासीं,
हल्यो हले ही ज़िन्दगीअ जो कारवां हल्यो हले

2. ख़िज़ां बि जे चमन में आई त छा थी प्यो ?
ग़मनि जी लहर मन में जे छाई त छा थी प्यो ?
मुंहुं मुश्कंदे ड्रींदासीं,
वर वर करे चवंदासीं,
हल्यो हले ही ज़िन्दगीअ जो कारवां हल्यो हले

3. दुखनि में तरानो जो ख़ुशीअ जो थो प्यो ग़ाए,
सच आहे सोई पाण थो मंज़िल ते रसाए ?
गर्दिश सां बि विढंदासीं
दर-दर इएं चवंदासीं,
हल्यो हले ही ज़िन्दगीअ जो कारवां हल्यो हले।

— सावनकुमार "उदासी"
(हिक घड़ी मूंसां बि घारि, 1968)

زندگيءَ جو ڪاروان

هليو هلي هي، زندگيءَ جو ڪاروان هليو هلي

١. قدم قدم تي جي مشڪل اچي ته ڇا؟
طوفان ۽ آنڌيون ته جي شامل هجن ته ڇا؟
مهن مڙس ٿي ڏينداسين،
هر هر اٿين چونداسين،

هليو هلي هي زندگيءَ جو ڪاروان هليو هلي

٢. خزان ته جي چمن ۾ آئي ته ڇا ٿي پيو؟
غمن جي لهرن ۾ جي ڇانئي ته ڇا ٿي پيو؟
مهن مشڪلي ڏينداسين،
ور ور ڪري چونداسين،

هليو هلي هي زندگيءَ جو ڪاروان هليو هلي

٣ دکن ۾ ترانو جو خوشيءَ جو ٿو پيو ڳائي،
سچ آهه سو ئي پاڻ ٿو منزل تي رسائي،
گردش سان ته وڙهنداسين،
در در اٿين چونداسين،

هليو هلي هي زندگيءَ جو ڪاروان هليو هلي.

ساون ڪمار "اداسي"
(هڪ ڳهڙي مولسان ته گهار، ١٩٦٨)

सहकार

अ़सीं सहकार ऐं सिक सां नईं दुनिया अॾींदासीं,
टुटल जे साज़ जूं तारूं अ़सीं तिनि खे गुंढींदासीं।

न ज़ालिम को हिते रहंदो न को मज़्लूम ई रहंदो,
अमीरनि ऐं ग़रीबनि जा अ़सीं तब्का गॾींदासीं।

कढी कीने कुदूरत खे जहालत ऐं हिक़ारत खे,
नएं-सिरि इल्म ऐं अख़्लाक़ जी जोती भरींदासीं।

उजड़ जा आहि एराज़ी थींदी सहकार सां आबाद,
न थींदी खोटि पोइ उनजी भर्या भाॻ्या थी पवंदासीं।

ॿधीअ में ई वॾो ॿल आहि थिए मुश्किल थो कमु आसान,
कुल्हे सां सभु कुल्हो लाए अ़सीं हरदम छॾींदासीं।

शहीदनि ख़ून पंहिंजे सां कयो आज़ाद भारत खे,
अ़सीं भारत जी तरक़्क़ीअ लइ पंहिंजी जिन्द जान ॾींदासीं।

मतो सहकार जो आला सुञा सावा कंदो बेशक,
अ़सीं मेलाप मेहनत सां पंहिंजी मंज़िल ते रसंदासीं।

—दयाल "आशा"
(पुष्प पंखिड़ियूं, 1969)

سهڪار

اسين سهڪار ۽ سڪ سان ٽئين دنيا اڏينداسين،
ٽٽل جي ساز جون تارون اسين تن کي ڳنڍينداسين.

نه ظالم ڪو هتي رهندو نه ڪو مظلوم ئي رهندو،
اميرن ۽ غريبن جا اسين طبقا ڪٽينداسين.

ڪڏهين ڪين ڪدورت کي جهالت ۽ حقارت کي،
ٽئين سر علم ۽ اخلاق جي جوتي ٻارينداسين.

اڄڙ جا آهه ايراضي، ٿيندي سهڪار سان آباد،
نه ٿيندي ڪوٺ پوءِ اُن جي ٻڙا ٻاڙيا تي پوکينداسين.

ٻڌيءَ ۾ ئي وڏو ٻل آهه، ٿئي مشڪل تو ڪم آسان،
ڪلهي سان سڀ ڪلهو لائي اسين هردم چڙهنداسين.

شهيدن خون پنهنجي سان ڪيو آزاد ڀارت کي،
اسين ڀارت جي ترقيءَ لئه پنهنجي جند جان ڏينداسين.

مٿو سهڪار جو اعليٰ سچا ساوا ڪندو ٻمڪ،
اسين ميلاپ محنت سان پنهنجي منزل تي رسنداسين.

دلال "آشا"
(ٻشپ ٻنگڙاون، ١٩٦٩)

सिन्धी मारू ढोल !

सिन्धी मारू ढोल, सुहिण्यू तिनि जूं मुहब्बतूं,
सादा सादा बोल, सुरह्यू सुरह्यू गाल्हिड़्यूं !

सावणु आयो, नड़ु वगो, झांग्युनि चोर्या चंग,
रंग-बिरंगी उमंग भूमीअ जा भूमी उथ्या !

भाकी पाए नितु मिलनि, दिल सां दिल लाईनि,
जीअ में जायूं डियनि सिन्धी इअं मेहमान खे !

सिन्धी सांग्युनि जी त आ, समाजवादी जान,
अङणि अचे मेहमान, खैरत पुछनि समाज जी !

ए आला ! ए पाक ! आउ अदब सां मूं अग्यां,
आह्यां बेशक खाक, पर सिन्धूअ जे पेट जी !

—इन्द्र भोजवाणी
(बिजल्यूं थ्यूं वर्सनि, 1970)

سنڌي مارُو ٻول!

سنڌي مارُو ٻول، سهڻيون لن جون صحبتون،
سادا سادا ٻول، سرهيون ڳالهڙيون!

ساوڻ آيو، ٿر وٺو، جهالڳين چورڙا چنگ،
راڳ ڳالڳي اُمنگ پوپيءَ جا جهوٽي آتما!

ڳاڪي ٻاڻي نت ملن، دل سان دل لائين،
جيءَ ۾ جاڳون ڏين سنڌي اِتن مهمان کي!

سنڌي سانگين جي ٿه آ، سماجوادي جان،
اڱڻ اچي مهمان، خدمت ٻچن سماج جي!

اي اعليٰ! اي ٻاهڪ! آءُ ادب سان ٻون اڳيان،
آهيان ٻهشڪ ڪاڪ، ٻر سنڌوءَ جي ٻيٽ جي!

اندر ڀوجواڻي
(ٻجليون ٿيون ٻرسن، ١٩٧٠!)

ग़ज़ल

जेका गुज़िरी सा भुलायूं जो अञा जिअणो आ
को नओं वक़ु वरायूं जो अञा जिअणो आ ।

छो पलउ छंडे उथूं आस जे पिड़ मां हाणे
अचु नओं दाउ लगायूं जो अञा जिअणो आ ।

पंहिंजे दुख सुख जो त हिन सां ई संबंधु आ
चाहु जगु मां छो घटायूं जो अञा जिअणो आ ।

कंहिं न कंहिं आस जी दूंहींअ खे दुखाए दिल में
नितु नवां पूर पचायूं जो अञा जिअणो आ ।

हाणे ई ख़ून जिगर जो पी कयूं पूरो छो ?
कुछु त पोइ लइ भी बचायूं जो अञा जिअणो आ ।

हू सुख़न फ़हम "कमल" एं असां जी जान सुख़न
हाणे किअं हुन सां फिटायूं जो अञा जिअणो आ ।

— एम० कमल
(भुर्यिल जीउ, 1971)

غـزل

جيڪا گذري سا ٻڌايون جو اڃا جيئڻو آ
ڪو نئون ورق ورايون جو اڃا جيئڻو آ

ڇو ٻلڪ ڇنڊي اُٿون آس جي ٻُڙ مان هاڻي
اڄ نئون داغ لڳايون جو اڃا جيئڻو آ.

پنهنجي ڏک سک جو ته هن سان ئي سنٻنڌ آ
چاهه جڳهه مان ڇو گهٽايون جو اڃا جيئڻو آ.

ڪنهن نه ڪنهن آس جي ڏوهيڻ کي ڏکائي دل ۾
اس لوان ٻور ٻچايون جو اڃا جيئڻو آ.

هاڻي ئي خون جگر جو ٻي ڪيون ٻورو ڇو؟
ڪاڄ نه ٻوءِ لڳه ٻي ٻچايون جو اڃا جيئڻو آ.

هو سخن فهم "ڪمل" ۽ اسانجي جان سخن
هاڻي ڪڏهن هن سان ڦٽايون جو اڃا جيئڻو آ.

ايم. ڪمل
(جهرپال جيءَ، ١٩٧١)

ग़ज़ल

अचु त साथी गीत के मस्तीअ में ग़ाईदा, हलूं,
जा घिटी वैरान उति, महफ़िल मचाईदा, हलूं ।

रोज़ु राड़े जे जहान में, राज़ु आहे ग़म संदो,
प्यार जी ख़ुशबू पखेड़े ग़म भुलाईदा हलूं ।

जे वण्या ख़ामोश नग़मा, साज़ पुणि बेदम वण्या,
अचु नवां नग़मा, नवनि साज़नि ते ग़ाईदा, हलूं ।

जो सितमगर कीन धारे दिल में ग़ुर्बत जो ख़याल,
अचु त उन ज़ालिम संदी हस्ती मिटाईदा हलूं ।

आहि जे पुख़्तो इरादो, पहुचंदासीं माग़ु ते,
फ़ख़ुर सां पंहिंजो निशान, हर जा लग़ाईदा हलूं ।

चाल मस्तानी असांजीअ ते भली तन्क़ीद थिए,
"मस्त" पर हरदम असीं था विख वधाईदा हलूं ।

—टेकचंद "मस्त"
(1971)

غــزل

اڄ تہ ساٿي گيت کي مستيءَ ۾ ڳائيندا، هلون،
جا ڏٺي ويران اسان، محفل مچائيندا، هلون.

روح رازي جي جهان ۾، راڄ آهي غم سندو،
پيار جي خوشبوءِ پکيڙي، غم ڀلائيندا هلون.

جي ٿيا خاموش نغما، ساز ٽٽڻ بيدم ٿيا،
اڄ انهن نغمن، انهن سازن کي ڳائيندا، هلون.

جو ستمگر کين ڌاري دل ۾ غربت جو خيال،
اڄ تہ اُن ظالم سنديءَ، هستي مٽائيندا هلون.

آهہ جي پختو ارادو، پهچنداسين ماڳ تي،
فخر سان پنهنجو نشان، هر جا لڳائيندا هلون.

چال مستاني اسانجي تي ڀلي ٺٺوليون ٿئي،
"مست" پر هر دم اسين تہ وک وڌائيندا هلون.

ٽيڪچند "مست"
(١٩٧١)

नईं रोशनी

समाजवाद असांजो मक़सद आ,
आसमान असांजो शाहिद आ,
नईं ख़यालात, नईं संगत आ,
नईं रोशनीअ जो स्वागत आ ।

पहिर्यों वेसु गान्धीअ फ़क़ीरीअ जो—
"मिटायो फ़र्क़ ग़रीबी-अमीरीअ जो,
सभेई हिक जहिड़ा इन्सान आहिनि,
नाम जे नज़र में समान आहिनि ।"

बुधो-अणबुधो पैसे वारनि कयो,
अनु पोइ पक्को चूंड यारनि कयो,
क़ानूनी सहारो वठिणो ज़रूर
न त समाजवाद अचिणो न मूर ।

बण्यूं बैंकूं अमानत क़ौम जी,
अड़ावत ओचिती न थी रोम जी,
मुल्क खे ज़रूरत मेहनत जी आ,
समानता तक़ाज़ा वक़्त जी आ ।

—रूपकुमार "घायल"
(1971)

نئين روشني

سماجواد اسان جو مقصد آ،
آسمان اسان جو شاهد آ،
نئين خيالات، نئين سنگت آ،
نئين روشنيءَ جو سواگت آ.

ڀهرو ويس گانڌيءَ فقيريءَ جو-
"مٽايو فرق غريبي-اميريءَ جو،
سڀئي هڪ جهڙا انسان آهن،
رام جي نظر ۾ سمان آهن."

ٻڌو - اٿ ٻڌو ٻڌسي وارن کيو،
هارن ٻوءِ ٻڪر ڇوالب ٻارن کيو،
قانوني سهارو ونڊو ضرور،
نه ته سماجواد اچڻو نه مور.

ٻڻون ٻنڪون امانت قوم جي،
اڏاوت اوچتي نه ٿي روس جي،
ملڪ کي ضرورت همت جي آ،
سمانتا تقاضا وقت جي آ.

روپ ڪمار "گهايل"
(١٩٧١)

दोहा, सोरठा, बैत

ॿाझारा की ॿाझ मां, ऊजल किरणा ओति,
मन ॲधियारी ॿाट में, जाॻे काई जोति !

मूंखे मारे थो सघे, कीन कडॾहिं भी काल,
मुंहिंजो आदि न अंत को, थ्यणो नाहि ज़वाल !

अगु में प्यारो मान हो, अजु आ प्यारो नान,
भोर टुकर जे वास्ते, बदज़न थ्यो इन्सान !

राइ ॾियाच न ॻोलि, कान्हे कमी ॾेह में,
ॿीजल बणिजी ॿोलि, सिर पवनिई झोल में !

छॾि तूं गीरव गाउ, गोरे-गोरे रूप जो,
कंहिं जो कंदो जटाउ, जोभन-रूप न दाइमी !

टार-टार ते गुल फुटा, फूलार्यो आ फाॻु,
चाॻु करे चंचल कली, भौंरु वि ॻाए राॻु,
मोटु, पुछाणे माॻु, मिलिजे मिठिड़ी मुंद में !

मूंखां अगु में भी मिठा, हुआ गूंजंदा गीत,
मूं विन पुणि के मीत, गूंजाईंदा गीत प्या !

—हासाराम "पीआ"
(1972)

دوها، سورٺا، بيت

ٻاجهارا ڪي ٻاجهه، مان، اوجل ڪرٽا اوس،
من اڌياري ٻاٽ ۾، جاڳي ڪائي جوس!

مونکي ماري تو سگهي، ڪين ڪڏهن ڪي ڪال،
منهنجو آد نه انت ڪو، تنهنجو ناهه زوال!

اڳ ۾ پيارو مان هو، اڄ آ پيارو نانءُ،
ٿور ٽڪر جي واسطي، ٻڌڻ ٿيو انسان!

راءِ ڏيا ج نه ڳول، ڪاهي ڪمي ڏيهه ۾،
ٻيجل ٻڌجي ٻول، سر ٻوڙائي جهول ۾!

ڇڏ تون گيرب ڳاءُ، ڳوري گوري روپ جو،
ڪنهن جو ڪند و جتاءُ، جوڀن روپ نه دائمي!

ٽار ٽار تي گل ڦٽا، ڦولارو آ ڦاڳ،
جاڳي ڪري چهچل ڪلي، ڀؤر نه ڳائي راڳ،
موٽ، پڇاڙي ماڳ، ملڻي منزي مند ۾!

مولڪان اڳ ۾ هئي مٺا، هئا گونجندا گيت،
مون لئي ٻڻ ڪي ميت، گونجائيندا گيت پيا!

هاسا رام ”پيتا“
(۱۹۷۲)

पाछा

रोशनी,
ऊंदहि ।
डिघा-वेकिरा,
ड्गि‍ा-फिड्ा,
मेरांझिड़ा,
रोशन सियाह पाछा ।

ही पाछनि जे पुठ्यां पाछा
मथां पाछा ऐं पाछा हेठि
पाछनि जे मथां पाछा,
ही मुंझ्यल-मुंझ्यल पाछा ।
मां जादूअ हेठि आयल शख़्स जां
प्यो थो फिरां
तिनिजे पुठ्यां ।

छडायां जीअं थो तिनि खां पाणु
तीअं अटकां
मां
अञा ताईं प्यो भटकां
हिननि पाछनि में पाछनि पुठ्यां ।

—हीरो ठकुर
(1965)

پاڇا

روشني،
اوندھ.
ٻگھا وڻڪرا،
ڏنگا ڦڏا،
ميرا لڄهڙا،
روشن سياه پاڇا.

هي پاڇن جي پٺيان پاڇا
مٿان پاڇا ۽ پاڇا هيٺ
پاڇن جي مٿان پاڇا،
هي منجهيل منجهيل پاڇا.
مان جادوءَ هيٺ آيل شخص جان
پيو ٿو ڦران
لنڄي هٿيان.

ڇڏايان جيئن ٿو لن کان پاڻ
ليئن اٽڪان
مان
اڃا ڳاٽڻ پيو پٽڪان
هنن پاڇن ۾ پاڇن پٺيان

هيرو ٺڪر
(١٩٦٥)

नईं सभ्यता

नईं सभ्यता में
वडुनि शहरनि जी हिक ज़रूरत
कैक्टस !
ज्रणु भूंडो डुई रह्यो आ !
एं कंडा
ज्रणु कंहिं अमलदार जे ग्राल्हनि जियां
चुभी रह्या आहिनि !
उफ़ ! ज़िन्दगी हीअ
नौकर शाहीअ जी, ग़ुलाम शाहीअ जी !

—जयन्त रेलवाणी
(1966)

نئين سڀيتا

نئين سڀيتا ۾
وڏن شهرن جي هڪ ضرورت
ڪئڪٽس !
ڄڻ پوکيو ڏيئي رهيو آ !
۽ ڪنڊا
ڄڻ ڪنهن عملدار جي ڳالهين جيان
چڀي رهيا آهن !
اُف ! زندگي هيءَ
نوڪرشاهيءَ جي، غلام شاهيءَ جي !

جيمس رهواڻي
(۱۹٦٦)

वंड पाछीअ जी

खेसि वक़्तु वधी पवे
त
मूं वटि अचे
मूंसां गडु रहे,
मां बि हाणि खांउसि अलगु-अलगु रहण लगो आह्यां ।

वक़्तु न,
वक़्त जी बचत,
ज़िन्दगी न,
ज़िन्दगीअ जी जूठ
असीं पाण में वंडींदा आह्यूं ।

इहा वंड
रक़म जी न,
वंड पाछीअ जी आहे ।

—डॉ० मोतीलाल जोतवाणी
(अनासिर जी साज़िश, 1968)

ونڊ ڀاڃيءَ جي

ڪيس وقت وڏي ٻوي

ته

مولوت اڇي

مولسان ڪڏ رهي ؛

مان ٻه هاڻ ڪالنس الڳ - الڳ رهڻ لڳو آهيان .

وقت ته،

وقت جي اڳهت،

زندگي ته،

زندگيءَ جي جوت

اسين ٻاڻ ٻ واند ٻيدا آهيون .

اها واند

رهم جي ته،

وند ڀاڃيءَ جي آهي .

ڊاڪٽر موتيلعل جوتواڻي

(عناصر جي سازش، ١٩٦٨)

जंग एँ जंग

जंग-भावीअ जे शीखुनि में क़ैद
ज़िन्दगी
अचु वञु करे
जीअण जो बहानो करे रही आहे
बुई हिक ब्रिए खे समुझण जी कोशिश था कनि।
मौत डिठो ज़िन्दगी :
ज़िन्दगी ब्लैक-आऊट आहे।
ज़िन्दगीअ भांयो :
मौत ब्लैक-आऊट आहे ।
पर बुई ख़ुश आहिनि ।
मौत खे तसल्ला आहे—
हू ज़िन्दगीअ जी हिफ़ाज़त करे रह्यो आहे
ज़िन्दगीअ खे तसल्ला आहे—
हूअ मौत जे पहरे हेठि सलामत आहे ।
ऐं....
वज़नदार बूटनि जे भारी आवाज़ हेठां
अचु वञु जी कोमल आहट
चुपचाप शांत थींदी पेई वञे....
मृत्यु देवता जे जटाउनि मां वहंदड़ु
गंगा जो जल

جنگ ۽ جنگ

جنگ - ٻاويءَ جي شيخن ۾ قيد
زندگي
اڄ وچ ڪري
جيئڻ جو ٻهاو ڪري رهي آهي
ٻئي هڪ ٻئي کي سمجهڻ جي ڪوشش ٿا ڪن.
موت ڏنو زندگي:
زندگي ٺاڪ - آئوٽ آهي.
زندگيءَ ٻاليو.
موت ٺاڪ - آئوٽ آهي.

پر ٻئي خوش آهن.
موت کي تسلي آهي —
هو زندگيءَ جي حفاظت ڪري رهيو آهي
زندگيءَ کي تسلي آهي —
هوءَ موت جي ٻهري همت سلامت آهي.
۽ ....
وزندار ٻوٽن جي ڀاري آواز هيٺان
اڄ وچ جي ڪومل آهت
چپ چاپ شامت ٿيندي ٻيئي وڃي ....
مرليو ديوتا جي جٽائن مان وهندڙ
گنگا جو جل

सुकी
युद्ध देवीअ जे गले में प्यल
निर्जीव खोपिड़्युनि मां
रतु बणिजी टिमण लगो ।

—हरीश वास्वाणी
(सिन्धी टाईम्स, मार्च 1969)

سڪي

هڪ دهوڙ جي گلي ۾ پيل
ٽرجهو ڪوٺڙن مان
رس ٻٽڻ جي ٽمڪ لڳو.

هريش واسواڻي
(سنڌي ٽائمس، مارچ ١٩٦٩)

हिस्सनि में जीवन

मूं केतिरा ख़ारिज भाव
फिटा करे छडिया आहिनि
मां कवी थ्युसि त छा थ्यो !
हिकु सचु बुधायां तोखे
जे हिम्मथ धारीं—
तूं ईंदींअ
मुंहिंजो चेहरो अज़ख़ुद टिड़ी पवंदो
पर मां ख़ुशी महसूस न कंदुसि
तूं वेंदीअ
मां मायूस थी वेंदुसि
पर ग़म महसूस न कंदुसि।
कुझु बिजली बटण जियां हालत आहे
केरु बि 'आन' करे, 'आफ़' करे।
तुंहिंजी जुदाईअ
हिक भेरो बि ख़याल न आयो तुंहिंजो
मां ख़ुश होसि ब्यनि सां
जिअं तो सां हूंदो आह्यां
ऐं इएं
हिन हुन सां मुरकी खिली
मूं हिस्सनि में जिअणु सिखो वर्तो आहे।

—वासुदेव मोही

(सिन्धी टाईम्स, मार्च 1969)

حسن ۽ جڀون

مون ڪمرا خارج ٻاو
ڦٽا ڪري ڇڏيا آهن
مان ڪوي ٿمس نه ڇا ٿيو!
هڪ سچ ٻڌايان توکي
جي همت ڏارين —
تون انهندين ۽
منهنجو چهرو ازخود ٽڙي پوندو
پر مان خوشي محسوس نه ڪندس
تون ويندين ۽
مان مايوس ٿي ويندس
پر غم محسوس نه ڪندس.
ڪجهه اهلي ٻنڌ جيان حالت آهي
ڪٿر نه "آن" ڪري "آف" ڪري.
منهنجي جدائيءَ ۾
هڪ ٻهرو نه خيال نه آيو منهنجو
مان خوش هوس ٻين سان
جٽن توسان هوندو آهيان
۽ اٿين
هين هن سان مشڪي ڪلي
مون حسن ۽ جڀن سکي ورتو آهي.

واسديو موهي
(سنڌي ٽا ٿمس ۽ مارچ ١٩٦٩)

सालारजंग म्यूज़ियम में

सालारजंग म्यूज़ियम जे
चंद कमरनि में
चंद आदम-क़द शीशा ।
पुठ्यां को हसीन चेहरो
अचानक लंघे थो वत्रे
इएं जिएं
अलाउद्दीन लाइ
पद्मिणी लंघे वेई हुई ।
लेकिन मौं
अलाउद्दीन न आह्यां
चेहरो पद्मिणी न आहे ।
को भीमसेन बि न आहे
इनकरे इतिहास जो सिर्फ़
हिक
मुर्दा
बदकार
खिनु
कहिं ग़लत हवाले में
दुहराइजी थो वत्रे
ज़िन्दगीअ जे
ग़लत दुहराअ वांगुर ।

—आनन्द खेमाणी
(कूंज, जूलाइ, 1970)

سالار جنگ ميوزيم ۾

سالار جنگ ميوزم جي
چند ڪمرن ۾
چند آدم قد شيشا،
انهان ڪو حسن چهرو
اچانڪ لڳهي ٿو وڃي
ائين جڻ
علاؤالدين لاءِ
پدمڻي لڳهي وئي هئي۔
ليڪن مان
علاؤالدين نه آهيان
چهرو پدمڻي نه آهي
ڪو پدمسين نه نه آهي
انڪري احساس جو صرف
هڪ
مرده
پڌڪار
آن
ڪڏهن غلط حوالي ۾
دهرائجي ٿو وڃي
زندگيءَ جي
غلط دهراءَ وانگر۔

آنند کيماڻي
(ڪوليج، جولاءِ ١٩٧٠)

'मेन स्विच आफ़ !'

मूं ह्र का तकलीफ़ वठी
हर कंहिं कमरे में वञी
हर ह्रिक बटणु हेठि करे
हर का बती ब॒ारी
पर तो ह्रिकु ई
'मेन स्विच' 'आफ़' करे
ह्र काई रोशनी
मिटाए छडी, हटाए छडी !

—रतन "दिलबर"
(तराना, 1971)

"ميڻن سوچ آف!"

ٻون هر ڪا تڪليف وٺي
هر ڪنهن ڪمري ۾ وڃي
هر هڪ ٽڪ همت ڪري
هر ڪا ٻتي ٻاري
ٻر لو هڪ ٿي
"ميڻن سوچ" "آف" ڪري
هر ڪا روشني
مٽائي ڇڏي، هٽائي ڇڏي!

رتن "دلبر"
(ڏرالا، ١٩٧١)

एहसास

हिक डींहुं धरतीअ ते
नारद खोल्यो हिक दुकान
इण्डलठ जे बोर्ड ते लिख्याई—
पंहिजूं ख़्वाहिशूं ख़रीद कयो
मुंहिजी जज़्बाती दिल जे उमंगनि जो
स्वागत कंदे काउण्टर ते
मेनका आख्यो,
"का सेवा ?"
"शान्ती, स्नेह, सिक,
हमदर्दी, ममता एं करुणा—
    सभु खपनि,"
मूं चयो।
"असीं फल न, पर ब्रिज विकिणंदड़ आह्यूं,"
जवाब मिल्यो।

—कृष्णलाल बजाज "प्रदीप"
(हिन्दवासी, 16 जूलाइ, 1972)

احساس

هڪ ذهن ڏرليءَ لئي
لارڊ کوليو هڪ دڪان
البلت جي بورڊ تي لکيا ٿين —
پنهنجون خواهشون خريد ڪريو.
منهنجي جذباتي دل هي امنگن جو
سواگت ڪندي ڪائونٽر تي
مينڪا آکيو،
”ڪا سيوا؟“
”شانتي، سنتوش، سک،
همدردي، ممتا ۽ ڪروڻا —
اهي سڀ کپن،“
مون چيو.
”اسين ڦل نه، پر ٻج وڪڻندڙ آهيون،“
جواب مليو.

ڪرشنلال ٻجاج ”پرديپ“
(هندواسي، ١٦ جولاءِ، ١٩٧٢)

धृतराष्ट्र

भ्रष्टाचार जे अंधकार मां जन्मयल,
अन्याय एें स्वार्थ जे तिरवरनि में
जहिं जे चरित्र जा नेण खुल्या
उहे सत्य जे सूर जे किरणनि में
कीअं खजु सघंदा,
छा डिसी सघंदा ?

व्यास !
तुंहिंजे इतिहास
मूं अख्युनि-सजे खे अगर अंधो कोठ्यो
त कुझु बुरो न कयो, ठीक कयो
मुंहिंजीअ अनीति ई एहसान कयो
मां धृतराष्ट्र
पंहिंजे राष्ट्र
जे ऊच इन्सानी क़दुरनि एें क़ीमतुनि
खां मुंहुं मोड़े,
जन-गण जे चरित्र-निर्माण खे पुठी डेई
लापरवाहीअ में अख्यूं बूटे,
विलास एें कर्त्तव्य-विमुखता जं
पटचूं चाढ़चल

ڏرتراشڻ

پرشٽاچار جي اڌڪار مان جنميل
اڀيا ۽ سوارٿ جي ٽڪرن ۾
جنهن جي چرتر جا ليڙ ڪليا
آهي ستيه جي سوُر جهي ڪرڻ ۾
ڪيئن تجي سگهندا،
ڇا ڏسي سگهندا؟

وناس!
تنهنجي اتهاس
مون اکين سڀي ڪي اگر الڌو ڪونيو
نه ڪجهه پرو نه ڪيو، نيڪ ڪيو
منهنجيءَ اليٽي ٽي احسان ڪيو
مان ڏرٽراشڻ
پنهنجي راشٽر
جي اوُچ انساني قدرن ۽ قيمتن
کان منهن موڙي،
جن- گڻ جي چرتر ارمان کي پٺي ڏيئي
لاپرواهيءَ ۾ اکيون پوٽي،
ولاس ۽ ڪرتوه- ومڪتا جون
پٽيون چاڙهيل

गान्धारीअ खे
काम-अन्धनि जियां भोगींदो रह्यु सि
हर रात सोम-रस जा
बषक चाढ़े
वासना जी डाकणि ते
चढ़ंदो-लहंदो रह्यु सि
गान्धारी ई छो
केतिर्युनि ई उपजाऊ भूम्युनि में
अनाड़ी किसान जियां
बिज छटींदो रह्यु सि
जीअं
सवें अनाचारी, अत्याचारी,
विवेकहीण, घमण्डी, गुस्ताख़,
हठी सला पैदा थी
महाभारत जे रत में
काम-ग्रन्थ जियां
परवान थी वञनि !

जड॒हिं बि, जिते बि
पैदा थींदुसि
मां धृतराष्ट्र,
उहो राष्ट्र
फलंदो-फूलंदो ज़रूर
पर विष-वृक्ष जियां
जंहिंजी छाया में

گانڌاريءَ کي
ڪامَ - انڌن جهان ٻوڙيندو رهيس
هر رات سوم رس جا
چهڪ چاڙهي
واسنا جي ناڪڻ ٿي
چڙهندو - لهندو رهيس
گانڌاري ٿي چئو
ڪيترن ٿي اپڃاڻو ٻوٽين ۾
آلاڙي ڪسان جهان
ٻج ڇٽيندو رهيس
جيئڻ
سوڻن اناچاري، اڻاچاري،
ووڪ هيڻ، گهمنڊي، گستاخ،
هنن سڀلا پيدا ٿي
مهاڀارت جي رت ۾
ڪامُ ڳراٺ جهان
ٻروان ٿي وچن!

جڏهن ٻه، جٽي ٻه،
پيدا ٿيندس
مان ڌر ڌراشٽر،
اهو راشٽر
ڦلندو - ڦولندو ضرور
ٻر وش - ورڪش جهان
جنهنجي ڇايا ۾

हि॒क पल लाइ ई साहु खणी
सजी॒ सृष्टी
नष्ट थी वेंदी···

व्यास !
ही राजु, ही ताजु
भोगु नाहे
हिक अखण्ड त्यागु आहे
मां हिक नष्ट थ्यल, पथ-भ्रष्ट
अंधे युग जो नायक भोगी अंधो
ईंदड़ युगनि जी रहबरीअ लाइ
वडे॒ वाके
अजु॒ इहो
स्वीकार्यां थो···

—आजिज़ बेदी
(हिन्दवासी, 23 जूलाइ,
1972)

هڪ ٻال لاءِ ني ساهه کڻي
سڄي سرشٽي
لڇندي لڳي وهندي....

وهاس !
هي راڄ، هي تاج
ٻوڙ، ناهي
هڪ اڪيلو ٻاڳو آهي
مان هڪ لڇندڙ ڳل، پٽ ٻرشت
الڏي هڪ جو ناهڪ ٻوڳي الڏو
اهڙو هڪن جي رهبري لاءِ
وڏي واڪي
اڄ اهو
سوڪاريان تو....

عاجز هندي
(هندواسي، ٢٣ جولاءِ، ١٩٧٢)

शाइरनि बाबत

1. परसराम रोहड़ा "निमाणो" (1921); "सितार" एं "सरगम" संदसि बु कविता-संग्रह आहिनि।

2. गोवर्धन "भारती" (1929); "गुल एं मुखिड़यूं", "उठा मौंहं मलीर" (गीतनि एं कविताउनि जा मज्मूआ); "लाल दाग़ पीलो चंडु" (कहाणी-संग्रह); 'लात्यूं' (ॿाल-कविताऊँ) जंहिं ते खेसि भारत सरकार जे तालीम खाते पारां इनाम हासिल थ्यो हो। भारतीअ जा सिन्धी फ़िल्मुनि में पुणि गीत आयल आहिनि। हू सुठो नाटककार पुणि आहे।

3. खीअलदास "फ़ानी" (1914); मशहूर-मारूफ़ शाइर. "सामूंडी लहयूं" (नज़्म) एं "मुक्ती मार्ग" (नसर) संदसि बु किताब शाया थ्या आहिनि।

4. बुलदेव गाजरा "गुपनाम" (1909); मशहूर शाइर; "गुमनाम सदा" एं "फूल में तराना" कबिता-संग्रह; "भारतवासी" हफ़्तेवार जो संपादक।

5. हरीकान्त (1935); "पिरह खां पहिरीं" संदसि तराईलनि जो मज्मूओ आहे। हिन लेखक रंगमंच लाइ के नाटक पुणि लिख्या अ हिनि। अजुकल्ह हू आकाशवाणी, देहलीअ तां सिन्धीअ में ख़बरूं पढ़ंदो आहे।

6. हूंदराज "सिकायल" (1931); कवी एं कहाणीकार।

شاعرن بابت

١. پرسرام روهڙا "اماڻو" (١٩٢١) "ستار" ۽ "سرگم" سنڌس ۾ ڪويتا-سنگرهه آهن.

٢. گوورڌن "ڀارتي" (١٩٢١)؛ "گل ۽ مکڙيون"، "انا مٽي هن ملير" (گيتن ۽ ڪويتائن جا مجموعا)؛ "لعل داغ پيلو چنڊ" (ڪهاڻي سنگرهه)؛ "لاليون" (ٻال ڪويتائون) جنهن لئي کيس ڀارت سرڪار جي تعليم کاتي پاران انعام حاصل ٿيو هو. ڀارتيءَ جا سنڌي فلمن ۾ پڻ گيت آيل آهن. هو سٺو ناٽڪڪار پڻ آهي.

٣. ڪيولداس "فاني" (١٩١٤)؛ مشهور معروف شاعر، "ساموندي لهرون" (نظم) ۽ "مٽي مارڪ" (نثر) سنڌس ۾ ڪتاب شايع ٿيا آهن.

٤. ٻلديو گاجرا "گمنام" (١٩٠٩)؛ مشهور شاعر "گمنام صدا" ۽ "قول ۽ ترانا" ڪويتا سنگرهه؛ "ڀارتواسي" هفتيوار جو سمپادڪ.

٥. هري ڪانت (١٩٣٥)؛ "پرهه کان پهرين" سنڌس ترائيلن جو مجموعو آهي. هن ايڪ رنگه منچ لاءِ ڪي ناٽڪ پڻ لکيا آهن. اڄ ڪلهه هو آڪاشواڻي، دهليءَ تان سنڌيءَ ۾ خبرون پڙهندو آهي.

٦. هوالدراج "سڪايل" (١٩٣١)؛ ڪوي ۽ ڪهاڻيڪار.

7. अमरलाल साधवाणी (1913); शाइर एं मज़्मून नवीस; हिन साहब उमर ख़य्याम एं ख़लील जिब्रान जो नस़्माणे नसर में तर्जुमो कयो आहे।

8. हूंदराज "दुखायल" (1910); लोकप्रिय कवी; "संगीत फूल", "झूंगार", "क़ौमी ललकार", "लाहूती लहर", "परलाउ", "संगीत वर्खा", "धरतीअ जा गीत" वग़ैरह कविता-संग्रह; "धरती माता" जो संपादक।

9. अजीत किशोर (1937); कवी एं कहाणीकार; संपादक, "हीर"।

10. राम पंजवाणी (1911); मशहूर-मारूफ़ लेखक; "क़ैदी", "ज़िन्दगी या मौत", "आहे न आहे?", "धीअरु न ॼमनि" वग़ैरह (नावल), "सिन्ध जा सत नाटक", "पूरब जोती" (नाटक), "सिक जी सौग़ात" (गीतनि जो इंतिख़ाब); "अनोखा आज़मूदा" ते साहित्य अकादेमी इनाम (1964) हासिल थ्यो होसि; जय हिन्द कालेज, बम्बई, जे सिन्धी विभाॻ जो प्रधान।

11. कमल केवलरामणी "प्यासी" (1929); कवी एं कहाणीकार।

12. गोवर्धन शर्मा "घायल" (1940); "छेड़ि सखी सरगम", "उहे माउरु भली मुर्कनि" एं "कूंजूं थ्यूं कुण्कनि" (कविता-संग्रह); तिनि खांसवाइ संदसि के कहाण्यूं एं एकांकी नाटक पुणि छप्या आहिनि।

۷. امر لعل ساڌواڻي (۱۹۱۳)؛ شاعر ۽ مضمون نويس؛
هن صاحب عمر خيام ۽ خليل جبران جو لعماڻي
نثر ۾ ترجمو ڪيو آهي.

۸. هوندراج "دکايل" (۱۹۱۰)؛ لوڪ پريه ڪوي؛
"سنگيت ڦول"، "جهونگار"، "قومي للڪار"،
"لاهوتي لهر"، "پرلاءِ"، "سنگيت ورکا"،
"ڌرتيءَ جا گيت" وغيره ڪويتا-سنگره؛
"ڌرتي ماتا" جو سمپادڪ.

۹. اجيت ڪشور (۱۹۳۷)، ڪوي ۽ ڪهاڻيڪار؛
سمپادڪ، "هير".

۱۰. رام پنجواڻي (۱۹۱۱)، مشهور معروف ليکڪ؛
"قيدي"، "زندگي يا موت"، "آهي نه آهي؟"،
"ڌيئر نه ڄمن" وغيره (ناول)، "سنڌ جا ست
ناٽڪ"، "پورب جولي" (ناٽڪ)، "سڪ
جي سوغات (گيتن جو انتخاب)؛ "انوکا آزمودا"
لئي ساهتيه اڪاڊمي انعام (۱۹۶۴) حاصل ٿيو
هوس؛ جئه هند ڪاليج، بمبئي، جي سنڌي
وڀاڳ جو پرڌان.

۱۱. ڪمل ڪيولراماڻي "پياسي" (۱۹۲۹)؛ ڪوي
۽ ڪهاڻيڪار.

۱۲. گووردن شرما "گهايل" (۱۹۴۰)؛ "چمڪي سرگم"
"آهي مائر پلي مرڪن" ۽ "ڪوانجون ٿيون
ڪڙڪن" (ڪويتا سنگره)؛ ٽن کان سواءِ سندس
ڪي ڪهاڻيون ۽ ايڪانڪي ناٽڪ پڻ ڇپيا آهن.

13. सावनकुमार "उदासी" (1940); "हिक घड़ी मूंसां बि घारि" नाले सां संदसि हिक कविता-संग्रह आहे।

14. दयाल "आशा" (1936); खेसि "लाल बहादुर शास्त्री", "बापूअ जे बाग़ मां", "शल अहिड़ा लाल ज़मनि", "महकंदड़ मुखिड़्यूं" किताबनि ते भारत सरकार जे तालीम खाते जा इनाम मिल्या हुआ; "पुष्प पंखिड़्यूं" में संदसि के कविताऊं गडु कयल आहिनि; श्रीमती चांदीबाई कालेज, उल्हासनगर में सिन्धीअ जो अध्यापक।

15. इन्द्र भोजवाणी (1918); "पिरह बाखू कढ्यूं" एं "विजल्यूं थ्यूं वर्सनि" बु कविता-कठ ज़ाहिर थ्यल अथसि।

16. एम० कमल (1925); "निंड जाग" (आज़ाद नज़्मूं) एं "भुयिलु जीउ" (ग़ज़ल) जो मशहूर शाइर।

17. टेकचन्द "मस्त" (1938); संदसि मज़्मूआ आहिनि "रंगीन पड़ाडा" एं "हसीन पड़ाडा"।

18. रूपकुमार "घायल" (1930); शाइर एं तालीम-दान।

19. हासाराम "पीआ" (1935); मशहूर शाइर।

20. हीरो ठकुर (1943); शाइर एं अख़बार नवीस; अजुकल्ह आकाशवाणी, देहलीअ तां सिन्धीअ में ख़बरूं पढ़दो आहे।

21. जयन्त रेलवाणी (1936); रचनाऊं-"आल्यूं पलकूं उदास नेण" एं "बंधननि जा पिञिड़ा" (कहाणी-संग्रह); "सफ़ेद सफ़ेद ऊंदहि" (उपन्यास); संपादक,

١٣. سائو ڪمار "اداسي" (١٩٤٠)؛ "هڪ گهڙي مولسان ٻه گهار" ناليءَ سان سندس ڪوتا سنگرهه آهي.

١٤. دال "آشا" (١٩٣٦)؛ ڪيس "لعل بهادر شاستري"، "باپوءَ جي باغ مان"، "شل اهڙا لعل ڄڻين"، "مهڪندڙ مکڙيون" ڪتابن لاءِ ڀارت سرڪار جي تعليم کاتي جا انعام مليا هئا؛ "پشپ پنکڙيون" ۾ سندس ڪي ڪوتائون گڏ ڪيل آهن؛ شريمتي چانديبائي ڪاليج، الهاس نگر ۾ سنڌيءَ جو اڌياپڪ.

١٥. اندر ڀوڄواڻي (١٩١٨)؛ "ڀرڻ ٻاڪون ڪيون" ۽ "ٻجليون ٽيون ٻرسن" ٻه ڪوتا - ڪتاب ظاهر ٿيل اٿس.

١٦. ايم. ڪمل (١٩٢٥)؛ "نئين جاڳ" (آزاد نظمون) ۽ "جهرڻ جيءَ" (غزل) جو مشهور شاعر.

١٧. نيڪچند "مست" (١٩٣٨)؛ سندس مجموعا آهن "رانگڻ ٻڙاڏا" ۽ "حسن ٻڙاڏا".

١٨. روپڪمار "گهايل" (١٩٣٠)؛ شاعر ۽ تعليمدان.

١٩. هاسارام "پيتا" (١٩٣٥)؛ مشهور شاعر.

٢٠. هيرو ٺڪر (١٩٤٣)؛ شاعر ۽ اخبار نويس؛ اڄ ڪلهه آڪاشواڻي، دهليءَ تان سنڌيءَ ۾ خبرون پڙهندو آهي.

٢١. جيٺمل رلواڻي (١٩٣٦)؛ رچنائون - "آليون پلڪون اداس لمحا" ۽ "بدلن جا پڙاڏا" (ڪهاڻي سنگرهه)؛ "سفيد سفيد اونده" (اپنياس)؛

"सिन्धु भारती"; मादरी बोलीअ खां सवाइ बी बोली (गुजराती) में लिखण करे "सिन्धी साहित्य नी श्रेष्ठ वार्ताओ" (गुजराती) ते भारत जे तालीम खाते पारां इनाम मिल्यो होसि।

22. डॉ० मोतीलाल जोतवाणी (1936); सिन्धी, हिन्दी एं अंग्रेज़ी में लिखंदो आहे; सिन्धीअ में संदसि के किताब आहिनि "ख़याल" (मज़्मून), "अंलकार एं छंद" (साहित्य-व्याकरण), "अनासिर जी साज़िश" (नयूं कविताऊं), "परंपराहीण" (कहाण्यूं); देशबन्धु कालेज नई देहली-19 में सिन्धीअ जो अध्यापक।

23. हरीश वास्वाणी (1940); सिन्धीअ में नईं कविता जो बानो; हुन केतियूं कहाण्यूं बि लिख्यूं आहिनि।

24. वासुदेव मोही (1943); "कविता" (अहमदाबाद) जे संपादकमंडल जो सदस्य; हिन साहब घणेई नयूं कविताऊं लिख्यूं आहिनि।

25. आनन्द खेमाणी (1935); कथाकार एं 'नओं कवी'।

26 रतन "दिलबर" 1946); "तराना" में संदसि के कविताऊँ गडु कयल आहिनि।

27. कृष्णलाल बजाज "प्रदीप" (1935); नसरनवीस एं 'नओं शाइर'; "युगधारा" जो संपादक।

28. आजिज़ बेदी (1937); नावलनवीस एं शाइर; आजिज़ "अञा त मां नंढिड़ी आह्यां" फ़िल्म जा गीत एं संवाद पुणि लिख्या आहिनि।

سمپادڪ، ”سنڌو ڀارتي“؛ مادري ٻوليءَ
ڪالسواءِ ٻي ٻولي (گجراتي) ۾ لکڻ ڪري
”سنڌي ساهتيہ لاءِ راشٽر وارتائو“ (گجراتي)
لاءِ ڀارت سرڪار جي تعليم کاتي پاران انعام مليو
هوس؛

٢٢ ڊاڪٽر موتيلعل جوتواڻي (١٩٣٦)؛ سنڌي، هندي
۽ انگريزي ۾ لکندو آهي؛ سنڌيءَ ۾ سندس
ڪي ڪتاب آهن - ”خيال“ (مضمون)، ”النڪار
۽ ڇند“ (ساهتيہ - وياڪرڻ)، ”عناصر جي سازش“
(نيون ڪويتائون)، ”پرمپراهيڻ“ (ڪهاڻيون)؛
ديش بنڌو ڪاليج، اتر دهلي-١٩ ۾ سنڌيءَ
جو اڌياپڪ.

٢٣. هريش واسواڻي (١٩٤٠)؛ سنڌيءَ ۾ نئين ڪويتا
جو باني؛ هن ڪيترين ڪهاڻيون به لکيون آهن.

٢٤ واسديو موهي (١٩٤٣)؛ ”ڪويتا“ (احمدآباد)
جي سمپادڪ منڊل جو سدسيہ؛ هن صاحب
گهڻيئي نيون ڪويتائون لکيون آهن.

٢٥. آنند کيماڻي (١٩٣٥)؛ ڪهاڪار ۽ ”نئون ڪوي“.

٢٦. رتن ”دلبر“ (١٩٤٦)؛ ”ترانا“ ۾ سندس
ڪي ڪويتائون گڏ ڪيل آهن.

٢٧. ڪرشن لعل ڀاڄ ”پرديپ“ (١٩٣٥)؛ نثر نويس
۽ ”نئون شاعر“؛ ”يڪ تارا“ جو سمپادڪ.

٢٨. عاجز ٻيدي (١٩٣٧)؛ ناول نويس ۽ شاعر؛
عاجز ”اڄا نه مان ننڍڙي آهيان“ فلم جا گيت
۽ سنواد پڻ لکيا آهن.



Rs. 4.00